तीरुवलंगदू ।

यह मद्रास रेलवे का स्टेशन मद्रास नगर से ३६ मील है तीसरे दरजे का किराया ।≈) लगता है ॥

स्टेशन के पास एक मन्दिर है जो बहुत मशहूर है ॥

तीरुवदामरुदूर ।

साऊथ इंडियन रेलवे का स्टेशन है और मद्रास बीच स्टेशन से १६१ मील है तीसरे दरजे का किराया २=) है । यहां महालिंग स्वामी का मन्दिर है, और साल में दो मेले दिसम्बर या जनवरी और अपरैल या मई में होते हैं जिन में बहुत यात्री आते हैं यह दोनों मेले एक एक हफ्ता रहते हैं और दूसरे मेले के बाद तैरने का तेहवार होता है । इस जगह कपड़ा बनता है । तीरुवदामरुदूर में सब रजिस्टरार का दफ्तर, थाना, अस्पताल और एक महल है जिस में तंजोर के राज बंश के लोग रहते हैं ॥

तीरुप्पवनाम ।

यह साऊथ इण्डियन रेलवे का स्टेशन और अहाता मद्रास में शिवगंगा जमींदारी का तालुक है । शिवजी का मन्दिर इस स्टेशन से ३ फरलांग उत्तर पश्चिम की ओर है जून और जुलाई के महीनों में यहां रथयात्रा का मेला होता है । पास ही थाना और सब रजिस्टरार का दफ्तर है । यहां धान, नारियल पान और केला होते हैं हर मंगलवार को एक मेला लगता है ॥

तीरुप्पवनाम मद्रास बीच स्टेशन से ३६१ मील है तीसरे दरजे का किराया ४-) लगता है ॥

यहां एक चत्तरम है जिस में यात्री ठहरते हैं और उन को खाना मिलता है। स्टेशन से एक फर्लांग के करीब एक बंगला भी है अगर खाली हो तो इस में अङ्गरेज़ ठहर सकते हैं॥

तीरुप्पूर।

मद्रास रेलवे का स्टेशन है। स्टेशन के पास बिन्नी साहिब और कम्पनी का रुई दबाने का कारखाना है। तीरुप्पूर से ५ मील के करीब अवनेशी जगह है जिस में एक मन्दिर है। इस के दर्शन को यात्री जिले के सब हिस्सों से आते हैं॥

तीरुप्पूर मद्रास से २७५ मील है डाक गाड़ी में तीसरे दरजे का किराया ३॥-) और सवारी गाडी में २॥=) लगता है॥

तीरुपत्तूर।

मद्रास रेलवे पर नगर है और स्टेशन के पासही है यहां दो मन्दिर हैं एक ब्रह्मेश्वरम कहलाता है और दूसरा कोरात्ती में स्टेशन के पश्चिम की तरफ ५ मील है जिसको ईश्वरम कहते हैं यहां बहुत यात्री आते रहते हैं, हर सोमवार को एक मेला जिस को शांडी कहते हैं इसजगह होता है॥

तीरुपत्तूर मद्रास रेलवे का स्टेशन है। मद्रास से इस का फासला १३७ मील और तीसरे दरजे का किराया डाकगाड़ी में १॥-) और सवारी गाड़ी में १।=) है॥

तीरुपत्तूर में कोरात्ती जाने के लिये यक्के और बैल गाड़ियां मिलती हैं। यक्के का किराया १) और बैल गाड़ी का ॥) है॥

तीरुपत्तूर में दो चोलत्रियां हैं जिन में से एक स्टेशन से पौन मील के करीब है और दूसरी एक मील के करीब है ॥

तीरुवल्लूर ।

साऊथ इण्डियन रेलवे की तंजोर डिस्टरिक्ट रोड और नगौर शाखों का जंकशन है इसका फासला मद्रास बीच स्टेशन से २५४ मील और मायावरम से २४ मील है और तीसरे दरजे का किराया २॥=) और ।)॥ लगता है ॥

यहां शिवजी का एक बड़ा भारी मन्दिर है और एक बड़ा तालाब है जिस को कमालायम कहते हैं । इस मन्दिर का हर साल मार्च और अपरैल के महीने में दस दिन तक रथरापत्थम तेहवार होता है जिस में हजारों यात्री आते हैं यहां बृहस्पति को एक मेला भी होता है ॥

तीरुवल्लूर में सब मेजिस्टरेट और मुनसफ़ की कचहरियां सब रजिस्टरार का दफ्तर, एक मशहूर हाई स्कूल है और दो चोलत्रियां हैं इन में से एक पचियप्पा मूडिलियर की है जिस में लोग ठहरते हैं और दूसरी वदापत्थि मंगलम मूडिलियर की इस में रोज़ सौ ब्राह्मणों को खाना मिलता है । स्वर्गवासी महाराजा तंजोर का एक बंगला भी है जिस में अंग्रेज़ ॥) रोज़ किराया देकर ठहर सकते हैं ॥

स्टेशन पर चाह काफी और अंग्रेज़ी पानी मिलता है ॥

तीरुपर्ङ्कुन्द्रम ।

मद्रास अहाते में साऊथ इण्डियन रेलवे पर स्टेशन है इस

के पास एक पहाडी है। जिस को सेकंथामलई कहते हैं। पहाड़ी के पास एक पुराना मन्दिर है। हर महीने और हर साल अपरैल के महीने में किर्थिगई का यहां तेहवार होता है और शिवजी के मन्दिर में पंगूनी ऊतशावम मेला होता है। पहाड़ी की चोटी पर एक मुसलमान की भी कबर है॥

यह स्टेशन मदरास बीच स्टेशन से ३५२ मील है तीसरे दरजे का किराया ३॥।ॐ) लगता है॥

इस जगह देशियों के आराम के लिये तीन चतरम हैं॥

तीरुकोएलूर।

अहाता मदरास के दक्खिनी अरकाट में पन्नार दरियापर नगर है। यहां थीरुविक्रम गोपालामूर्ति का बड़ा मन्दिर है, जिसमें हरसाल अपरैल और दिसम्बर के महीनों में मेले होते हैं। इस नगर के पास किलूर और अरिकन्दनालूर दो गांव हैं। उन में भी मन्दिर हैं। पहिले गांव में मार्च के महीने में रथयात्रा का मेला होता है। यहां हर बुद्ध के दिन एक मेला होता है। दरिया स्टेशन और नगर के बीच में बहता है और जब उस में जियादा पानी आजाता है तो किश्तियों में पार उतरते हैं। इस नगर में लूथरन इसाइयों का मिशन है जिस में लस बहुत अच्छा बनता है। यहां से मन्दिरों के वास्ते बाहर पत्थर जाता है और धान ईख और सुपारियां यहां पैदा होती हैं॥

तीरुकोएलूर साऊथ इण्डियन रेलवे के विल्लूपुरम गदूर सेक्शन पर स्टेशन है। मदरास बीच जंकशन स्टेशन से इस का फासला १२१ मील है तीसरे दरजे का किराया १।ॐ) लगता है॥

तीर्थबल्ली ।

अहाता मद्रास के जिला शिमोगा में गांव है जो शिमोगा नगर से ३० मील दक्खिन पश्चिम की तरफ तुंगा दरया के किनारेपर बसा हुआ है । बहुत से तीर्थों और तुङ्गादरया पर नहाने के बहुत से घाटों के सबब इस गांव का नाम तीर्थबल्ली होगया है । दरया के किनारे पर एक गढा है कहते हैं इस को परशुराम ने खोदा था और रामेशवाडा तेहवार के मौके पर जो मार्गशिर या अगहन महीने में तीन दिन तक होता है हजारों यात्री इस गढे मे स्नान करने आते हैं । यहां दो पुराने मठ भी हैं, स्नान के मौके पर बड़ा ब्योपार होता है ॥

मोगा और तीर्थबल्ली के बीच में तांगे चलते हैं, एक सवारी का किराया १॥) लगता है पर शिमोगा के पोस्टमास्टर को एक दिन पहले खबर देनी चाहिये ॥

शिमोगा से १८ मील तुङ्गा दरिया के किनारे पर मुन्दागुदी में एक धर्मशाला है और एक तीर्थबल्ली में भी है जहां ब्राह्मणों को बिना दाम भोजन मिलता है ॥

शिमोगा सदरन मरहट्टारेलवेमें पूना शहर से ४३२ मील है तीसरे दरजे का किराया डाकगाड़ी में ६॥।-)॥ और सवारी गाडी में ४॥)॥ लगता है ॥

तुगलकआबाद ।

इस स्टेशन से दो या तीन मील तुगलक आबाद के अजीब खण्डर हैं इसी सबब से इस स्टेशन का नाम तुगलक आबाद रक्खा गया है । खण्डर रेल से दो या तीन मील पश्चिम की तरफ दिखाई देते हैं । कुतुब मीनार उन से परे है । यह नगर और किला गयास-उद्दीन तुगलकबादशाह ने सन् १३२१ और १३२३ के बीचमें बनाये थे ।

तुगलकशाह का मक़बरा नई दिल्ली के बाहर बहुत सुन्दर बना हुआ है। तुगलकाबाद से ५ मील पश्चिम की तरफ पुरानी दिल्ली के खण्डर हैं जिसको चौहान राजपूत राजा पृथ्वीराज या राय पिथोड़ा ने बनाया था और इसी राजा ने शहाबउद्दीन गौरी से बचने के लिये लालकोट ११८० ई० में बनाया था। ११६३ में कुतुब उद्दीन ऐबक ने दिल्ली को फतह किया और मुसलमानों की दिल्ली बसाई। शहाबउद्दीन के मरने के पीछे कुतबउद्दीन हिन्दुस्तान का बादशाह हो गया और गुलामों के खानदान की नीव रक्खी कुतब साहिब की मसजिद, कुवत मीनार, लोहे की लाठ, इलाही दरवाज़ा और खुवाजा कुतबउद्दीन बखतियार काकी का मक़बरा देखने के लायक हैं॥

तुगलकआबाद बम्बई से जी० आई० पी० रेलवे में ६४५ मील और १२ मील दिल्ली से है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ११) और ≈) है और सवारी गाड़ी में ६।≈) और ≈)॥। है॥

तेनकासी।

तहसीलदार और सबमजिस्टरेट का सदर मुक़ाम है चितर दरिया पर वाके है और बड़े व्यापार की जगह है यह नगर ट्रावन-कोर की हद पर सब से बड़ा है और कोर्तलम के लिये रेलवे स्टेशन है कोर्तलम ठण्ढी जगह है और यहां नज़ारे और पानी की चादरों के सबब बहुत लोग आते रहते हैं। स्नान करने को भी बड़ी अच्छी जगह है। कोर्तलम स्टेशन से ३ मील दक्खिन पश्चिम की तरफ है, यहां शिवजी का मशहूर मन्दिर है, जो पन्द्रहवीं सदी ई० में बना था। यह मन्दिर देखने के लायक है॥

तेनकासी में धान और मसाला पैदा होता है। यक्के और गाड़ियां सवारी के लिये मिलती हैं॥

तेनकासी में देशियों के विश्राम के लिये ३ चत्तरम या चौलत्रियां हैं पर अंगरेजों के लिये कोई बंगला नहीं। कोतलम में बंगले किराए पर मिलते हैं॥

तेनकासी साऊथ इण्डियन रेलवे में मदरास बीच जंकशन से ४६१ मील है तीसरे दरजे का किराया ५।०) लगता है॥

त्रिवलोर।

मदरास रेलवे पर है। यहां और श्रीपरम्बूथुर में जो यहां से १० मील दक्खिन पूर्व की तरफ है कई मशहूर मन्दिर हैं जो देखने के लायक हैं, त्रिवलोर में हर महीने नए चांद के मौके पर एक मेला होता है, जिस में मदरास और दूसरी जगहों से यात्री आते हैं ब्रह्म ऊतशावम का मेला जो हरसाल अपरैल के करीब होता है १० दिन तक रहता है इस में बहुत यात्री आते हैं। त्रिपासोर का पुराना क़िला जिस को ईस्ट इण्डियन कम्पनी ने बनाया था यहां से ४ मील के करीब है वहां तक अच्छी सड़क जाती है॥

गाऊं में देसी मुसाफ़िरों के वास्ते चत्तरम याने धर्मशाला हैं॥ त्रिवलोर मदरास से २६ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ।-) और सवारी गाड़ी में ।)॥ लगता है॥

त्रिम्बक।

अहाता बम्बई के नासिक जिले में नासिक शहर से २० मील दक्खिन पश्चिम की तरफ एक नगर है। यह बड़े तीर्थ की जगह है और इस में तीन बड़े बड़े मेले होते हैं। पहला मेला कार्तिक पूर्णमा का नम्बर में, दूसरा नवरिथा का जनवरी में, और तीसरा

महा शिवरात्री का फर्वरी में होता है। नासिक जाने वाले यात्री भी यहां आते हैं पर सब से बड़ा मेला बारहवें साल त्रिम्बकेश्वर महादेव का उस वक़्त होता है जब बृहस्पति सिंहराशि में जाता है। अगला मेला १६२८ में होगा और शायद एक लाख रहेगा॥

त्रिम्बक में १२ धर्मशाला बम्बई के भद्रियों की बनाई हुई हैं पर उन में उनकी बिरादरी के लोग ठहरते हैं और यात्री अपने प्रोहतों के घरों में ठहरते हैं या और बन्दोबस्त करते हैं॥

त्रिम्बक के लिये सब से पास जी० आई० पी० रेलवे का असवली स्टेशन है पर यात्री लोग नासिक में उतरते हैं क्योंकि वहां तांगे और बैलगाड़ियां सवारी के लिये मिलती हैं॥

नासिक रोड स्टेशन बम्बई से ११७ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में १॥-) और सवारी गाड़ी में १।) है॥

त्रिचूर।

मदरास रेलवे पर है और कोचीन रियासत की पहले राजधानी थी। यह नगर बहुत पुराना है और बड़ा पवित्र माना जाता है। कहते हैं कि इस को विष्णु के छठे अवतार परशुराम ने बसाया था। नगर के बीच में वदाकुन्नाथन का बड़ा भारी मन्दिर है जिस के उत्तर दक्खिन पूर्व पश्चिम की तरफ चार दरवाजे हैं। इस मन्दिर का मेदम के महीने हर साल पुरम का तेहवार होता हैं जिस में हजारों लोग आते हैं यहां एक पवित्र कालिज भी है जहां पर प्रोहत बनने वाले ब्राह्मण वर्षों अकेले चुपचाप तप करते हैं॥

रेज़ीडैन्सी और राजा साहिब के महल के सिवा जिले के मैजिस्टरेट की कचैहरी, चीफ इंजनीयर रेवेनियू सुपरिन्टेन्डेंट तालीम के सुपरिन्टेन्डेंट और पुलिस के दफ़्तर हैं और एक असपताल भी है और स्टेशन के पास डाक बंगला है॥

जून से मार्च तक कोकाल नहर के रस्ते समुद्र के किनारे के शहरों को आ जा सकते हैं ॥

त्रिचूर में मन्दिर से आधे मील के फासले पर एक चत्तरम भी है ॥

त्रिचर मदरास रेलवे की साऊथ वैस्टर्न ब्रांच पर स्टेशन है इसका मदरास से फासला ३८१ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ४॥७) और सवारी गाड़ी में ४) है ॥

त्रिवेणी।

अर्थात् तीन दरिया। यह गाउं सूबा बंगाल के जिला हुगली में है और त्रिवेनी इस लिये कहलाता है कि गंगा, जमना और सरस्वती के संगम पर वाके है। सरस्वती के उत्तर की तरफ चौड़ा और ऊंचा त्रिवेनी घाट है जिस पर बड़ा सुन्दर सीढ़ियां बनी हैं, कहते हैं इस घाट को उड़ीसा के गजपति वंश के आखीरी राजा मुकुन्ददास ने जो सोलहवीं सदी में राज करता था बनाया था. सरस्वती के दक्खिन की तरफ त्रिवेनी गाऊं है जो बहुत पवित्र माना जाता है और पहिले विद्या के वास्ते मशहूर था और यहां ३० से भी जियादा संस्कृत पाठशाला थे, यहां ५ बड़े २ मेले होते हैं पहला मकर संक्रान्ति या उत्तरायन का पौषके आखीरी और माघ के पहले दिन होता है जब सूर्य्य मकर में जाता है पुरखा भतों को जो घर की चौकसी करते हैं और सब देवताओं को चढ़ावा चढ़ाया जाता है यह रीति घर का प्रोहत घर मेंही कराता है, स्नान मकरा संक्रान्ति के मौके पर सागर टापू में होता है और त्रिबेनी में मेला होता है जिस में ८००० लोग आते हैं दूसरा विश्वा संक्रान्ती जो फरवरी में उस मौके पर होता है जब सूर्य्य मेख की पहिली रेखा में पहुंचता

है। तीसरा मेला बारुनी का जो बंगाल में स्नान का सब से बड़ा मेला है बारना देवता की यादगार में फरवरी या मार्च में होता है। चौथा दशहरे का मेला जो गंगा जी के राजा सागर के ६० हज़ार लड़कों को जो एक ब्राह्मण महापुरुष के श्राप से भस्म होगये थे मुक्ति कराने के लिये पृथ्वी पर आने की यादगार में होता है। पाचवां कार्तिक मेला जो दुर्गा के पुत्र कार्तिकेया की यादगार में होता है॥

त्रिवेनी में धर्मशाला कोई नहीं यात्री सराय और किराया की दुकानों में ठैहरते हैं। हुगली में अग्निबोट, किश्तियां और गाड़ियां त्रिवेनी जाने के लिये किराये पर मिलती हैं॥

हुगली कलकत्ते से २४ मील है तीसरे दरजे का किराया इस्ट इण्डियन रेलवे में ।✓) लगता है॥

त्रिचनापली।

अहाता मद्रास में त्रिचनपाली जिले का बड़ा नगर कावेरी दरिया के दहाने किनारे पर है और बहुत सी लड़ाइयों के सबब बहुत मशहूर है॥

एक किला छावनी और कई गांव जो मियूनिसिपैलिटी की हद में है त्रिचनापाली में शामिल हैं। किले की दीवारें गिरा दी गई हैं पर नगर जो इस के अन्दर था और छावनी में फर्क करने के लिये शहर को अब तक क़िला कहते हैं। शहर के उत्तर की तरफ त्रिचनापली की चट्टान हैं जिसकी चोटी बड़े बाजार से २०६ फ़ीट ऊंची है। इस चट्टान पर शिवजी का मन्दिर है और इस की चोटी पर पिल्लयर (गणपति) का मन्दिर है। अगस्त में गनपति के मन्दिर का मेला होता है, जिस में अनगिनत यात्री आते हैं। चट्टान की चोटी पर से कावेरी दरिया और श्रीरंगम टापू का बड़ा

अच्छा नज़ारा दिखाई देता है। चट्टान के नीचे जेसूट कालिज और एम० पी० जी० कालिज है। स्टेशन के पश्चिम की तरफ़ वारिआर गावं है जो किसी समय बड़ा भारी नगर और चोला राज की राजधानी था। त्रिनापली की आबादी ६० हज़ार है और यह नगर मदरास अहाते में दूसरे दरजे हैं। यहां के चुर्ट और ज़ेवर बहुत मशहूर हैं॥

त्रिचनापली जंकशन या छावनी के स्टेशन के पास सेएटजान का गिर्जा है जिस में कलकत्ते के लाट पादरी हेबर साहिब जिनका यहां १८२६ में काल हुआ दफ़न हैं। छावनी में कलक्टर और मेजिस्टरैट की कचहरियां और साऊथ इण्डियन रेलवे के दफ़तर हैं दक्खिन की तरफ़ एक मैदान में छोटी छोटी पहाड़ियां हैं जिनमें से एक को सुनहरी और दूसरी को फ़क़ीर की पहाड़ी कहते हैं। जब कलाइव और लारन्स यहां लड़ रहे थे तो दूसरी पहाड़ी पर अङ्गरेज़ी और फ्रांसिसियों से लड़ाई हुई थी। स्टेशन पर अंग्रेज़ों को सोने की जगह मिलसकती है. और अङ्गरेज़ों और देसियों के लिये खाने के कमरे भी हैं अंङ्गरज़ों के कमरे का इन्तज़ाम सपेन-सर साहिब के हाथ में है और देसियों के कमरे का एक ब्राह्मण के पास है। स्टेशन से पौने मील के फ़ासले पर म्यूनिसिपेलिटी का बंगला है जिस में खानसामा भी है॥

शहर त्रिचनापली छावनी से २॥ मील है। छावनी का स्टेशन जिस को त्रिचनापली जंकशन कहते हैं मदरास वाच जंकशन से २५१ मील और त्रिचनापली फ़ोर्ट या शहर का स्टेशन २५४ मील है तीसरे दरजे का किराया २॥।-) और २॥।=) लगता है॥

चिन्नपठठा।

मदरास रेलवे का स्टेशन है। इस से ५ मील के करीब चिन्ता

तिरुपत्ती में श्री बंकातासा पेरुमल का मन्दिर है, जहां सितम्बर के महीने में मेला होता है और बहुत यात्री आते हैं ॥

थिन्नपट्टी मद्रास नगर से रेल में १६७ मील है तीसरे दरजे का किराया २~) लगता है ॥

थंगा चिमादम

पोर्ट पेमप्टहिल यहां से सवा मील है। कहते हैं कि बेलोरिनी थीर्थम में जो इस स्टेशन से एक मील उत्तर की तरफ़ है रामचन्द्र जी को पहले पीने का पानी मिला था इस सबब से यात्री यहां बहुत जाते हैं। थंगाचिमादम में दो चत्तरम है, एक स्टेशन से एक फ़र्लांग और दूसरी एक मील के फ़ासले पर है पोर्ट पेमप्टहिल और बेलोरिनी थीर्थम में कोई चत्तरम या डाक बंगला नहीं। यहां पोर्ट पेमप्टहिल और बेलोरिनी थीर्थम जाने के लिये गाड़ियां मिलती हैं किराया ॥) से १॥) तक लगता है ॥

थंगाचिमादम साऊथ इण्डियन रेलवे में मद्रास बीच जंकशन से ४४४ मील है तीसरे दरजे का किराया ४॥।~) लगता है ॥

थमबीकोहई।

साऊथ इण्डियन रेलवे का स्टेशन है। गावं स्टेशन से एक मील उत्तर की तरफ़ है यहां नार्यल बहुत होता है जिस के सबब वह गावं बहुत मशहूर है। स्टेशन से डेढ़ मील के फ़ासले पर मरावाकडू गांव में हर बुध के दिन मेला होता है और स्टेशन से ३ मील पश्चिम की तरफ़ मंजावायल गावं में चेत्र पुर्णिमा ऊशावम मेला हर साल दस दिन तक होता है जिस में बहुत यात्री आते हैं, गावं में देशियों के लिये दो होटल हैं। स्टेशन से २॥ मील पुथात्र-दायरकोईल गावं में एक मन्दिर है जिस में सोमबार को आधीरात

के वक्त माथवस्थंम परिमूर्रास्वामी की शिव पूजा होती है। करथीगई सिमात्रम तेहवार पर जो नवम्बर दिसम्बर में होता है बहुत यात्री आते है॥

गाव में कुल दो बलै गाड़ियां हैं जिन का किराया पुथावदायर कोईल तक ॥।) और ॥) लगता है॥

थम्बिकोटई मदरास जंकशन से २३५ मील है तीसरे दरजे का किराया २॥=) लगता है॥

थानेश्वर-कुरुक्षेत्र ।

दिल्ली अम्बाला कालका रेलवे पर पंजाब के ज़िला अम्बाला में एक नगर है कलकत्ते से १००० मील और दिल्ली से ९६ मील उत्तर की तरफ़ है पुराने ज़माने में एक बड़े राजा की राजधानी थी, बड़े तीर्थ की जगह है और यहां का मन्दिर और तालाब बहुत पवित्र माने जाते हैं क्योंकि सब से पहले आर्य यहां आकर बसे थे और आर्य धर्म्म फैलाया, यह देश का पवित्र हिस्सा ७० मील लम्बाई में और २० मील चौड़ाई में है। और इस में ३५२ तीर्थ हैं जिन में थानेश्वर का पवित्र तालाब स्टेशन से २० मील दक्खिन की तरफ़ है सब से बड़े हैं, थानेश्वर का पवित्र तालाब स्टेशन से एक मील के क़रीब है और चौकोना बना हुआ है जो क़रीब एक मील लंबा और चौथाई मील चौड़ा है और उसके उत्तर पूर्वी और दक्खिनी किनारों पर नहाने के घाट हैं और उन पर बड़े बड़े अच्छे बने हुए पुराने युग के मन्दिर हैं और पश्चिमी किनारे पर जंगल में बहुत से खण्डर है, तालाब के बीच में एक मन्दिर है जिस को जाने के लिये रास्ता बना है यह और मन्दिरों से पुराना है और बहुत माना जाता है, कुरुक्षेत्र का ज़िकर सस्कृत की किताबों में भी है इसका नाम ब्रह्मवर्त और इसकी जगह सरस्वती और दृशद्वती दरयाओं के

बीच में लिखा है, थानेश्वर और पेहोवा में हमेशा बहुत यात्री जाते हैं कहते हैं कि बाज़ी दफ़ा १० लाख के क़रीब होजाते हैं, ६ अप्रैल १८६४ के बड़े मेले पर जब चांद ग्रहण हुआ था और जो रेल के खुलजाने से पीछे पहला बड़ा मेला था। साढ़े सात लाख यात्री थे॥

थानेश्वर में पेहोवा जाने के लिये यक्के और बैल गाडियां मिलती हैं यक्के का किराया १) और बहली का १।) लगता है॥

कलकत्ते से थानेश्वर तक तीसरे दरजे का किराया ईस्ट इण्डियन रेलवे में ६।=) और अम्बाले से ।=) हैं॥

थाना।

ग्रट इण्डियन पैनिनशुला रेलवे पर बम्बई से २१ मील एक नगर है। बम्बई से तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ।-) और सवारी गाड़ी में ।) लगता है। कुछ लोगों के कनेरी की खोहों के मन्दिर यहां से ६ मील हैं। स्टेशन से डेढ़ मील के फ़ासले पर श्री गुणठाली का मेला होता है जिस में बहुत लोग आते हैं थाना खाड़ी सलसत्ते टापू और थाना के बीच में है इस में छोटी छोटी देसी किश्तियां चल सक्ती हैं बम्बई का पागलखाना इस स्टेशन से एक मील के क़रीब है। पकूरनी झील जिस से थाना शहर में पानी आता है यहां से ४ मील है और देखने के लायक़ है॥

स्टेशन पर सवारी मिलती है। स्टेशन पर जण्टलमैन्नों और लेडियों के लिये वेटिंग रूम बने हुए हैं और पास ही देसियों के लिये होटल और धर्मशाला हैं॥

डकोर।

बी० बी० ऐण्ड सी० आई रेलवे के अनन्द जंकशन से २० मील बड़ी तीर्थ की जगह है। यहां ज़िले की सब से बड़ो झील है

पर यह नगर कृष्णजी के मन्दिर के सबब बहुत जियादा मशहूर है कहते हैं इस मन्दिर में कृष्ण जी की मूर्ति द्वारका से लाकर रक्खी गई है मन्दिर पर एक लाख रुपया खर्च हुआ था और देवता का सिंहासन लकड़ी का है जिस में बड़ा सुन्दर बेल बूटा खोदा हुआ है और थोड़ी देर हुई महाराजा साहब गायकवाड़ ने इस को सवा लाख रुपया खर्च करके सोने और चांदी से सजाया है।

दकोर बड़ी मशहूर तीर्थ की जगह है ब्राह्मण से लेकर ढेड़ तक यात्रा को आते हैं पर छोटी जाति के लोगों को अन्दर नहीं जाना मिलता वह दूर सेही दर्शन कर लेते हैं॥

इस जगह के बड़ेमेले अस्सू (अक्तूबर) और कार्तिक (नवम्बर) में होते हैं जब ५० हजार से एक लाख तक यात्री इकट्ठे होते हैं जिन में से कुछ बड़ी बड़ी दूर से आते हैं और पूरे चन्द्रमा के मौकों पर यात्री ५ से १० हजार तक होते हैं॥

दकोर से २० मील उत्तर की तरफ कपादवंज नगर है जिस में बहुत व्योपार होता है । साबण शीशे और घी के कुप्पे बनते हैं नगर में एक सुन्दर हौज़ और पूर्वी दर्वाजे के पास एक आश्रम है। इस नगर में मुसलमानों की मसजिदों और कबरों के खण्डर हैं और एक जैनियों का मन्दिर है जो २५ साल हुये डेढ़ लाख रुपये के खर्च से बना था इस मन्दिर में संगमरमर के बड़े सुन्दर पील पावे और पच्चरकारी कियाहुआ संगमरमर का बड़ा फ़र्श है। दकोर और कपादवंज के बीच में लसुन्दरा के गरमपानी के सोतेहैं। इनका पानी बाज़ी जगह ११५ दरजे गरम और उस में गन्धक की बू आती है। कहते हैं कि यह पानी शरीर की खलड़ी के रोगों को अच्छा है।

दकोर और कपादवंज के बीच में तांगे चलते हैं। दकोर में १० धर्मशालायें हैं और कपाद्वंज में भी कई हैं॥

दकोर बी० बी० ऐंड सी० आई रेलवे की आनन्द गोधरा शाख पर स्टेशन है। इस का फासला बम्बई से २८६ मील है और तीसरे दरजे का किराया ३॥) लगता है ॥

नगर स्टेशन से १॥ मील के करीब है गाड़ियां किराये पर मिलती हैं ॥

दमराओं ।

ईस्ट इण्डियन रेलवे के बकसर स्टेशन से १० मील है कहते हैं कि इस जगह के मन्दिर में रामचन्द्र जी और अहिल्या बाई की मूर्त्तियां हैं। अहिल्याबाई बड़ी बुद्धिमान् थी पर अपने पती गौतम के श्राप से पत्थर की हो गई थी जब रामचन्द्र जी यहां आए तो फिर अपने रूप में आगई और परलोक को चली गई ॥

दमराओं में एक डाक बंगला और एक सराय है। बकसर में भी हाकमों के वास्ते स्टेशन से एक मील के फासले पर एक बंगला है ॥

बकसर कलकत्ते से ईस्ट इंडियन रेलवे में ४११ मील है तीसरे दरजे का किराया ४) लगता है ॥

दलमौ ।

अवध के जिला रायबरेली में गंगाजी के किनारे पर लखनऊ से ६० मील और कानपुर से ४८ मील एक नगर है। यह नगर दरिया के किनारे एक ऊंची चट्टान पर बसा हुआ है और बड़ापुराना शहर है। वर्षा के दिनोंके सिवाय यहां की आबहवा अच्छीहै। कार्तिक के महीने में जिले का सब से बड़ा मेला इस जगह होता है इस को कातकी का मेला कहते हैं यह मेला तीन दिन तक रहता है। ३ लाख के करीब यात्री गंगा जी में स्नान करने के लिये मेले के मौके पर दूर दूर से आते हैं ॥

अवध रुहेलखण्ड रेलवे का स्टेशन रायबरेली यहां से १६ मील है जहां से पक्की सड़क दलमौ को जाती है और सवारी मिलती है ॥

खशखश और तेल के बीज का व्यौपार होता है और चमड़ा वहां से कानपुर को जाता है ॥

दलमौ में एक सराय भी है। रायबरेली मुग़ल सराय से १४६ मील है तीसरे दरजे का किराया १॥) लगता है ॥

द्वारका।

अहाता बम्बई में काठियावार के पश्चिम की तरफ एक बन्दर और हिन्दुओं की बड़ी तीर्थ की जगह है। विष्णुपुराण में लिखा है कि जब कृष्ण जी के वंश के यादवलोग कमजोर होगए तो उन्होंने द्वारका नगर बसाकर उस के इर्द गिर्द दीवार बनाई और नगरको सुन्दर बागों पानी के हौज़ों और घरों से सजाया और वहां जनारधन मथुरा के लोगों को लेगया ॥

जिस दिन कृष्ण जी का काल हुआ समुद्र का पानी चढ़ गया और सारा द्वारका पानी में डूब गया पर कृष्णजी का स्थान बचा रहा मन्दिर अब तक बचा हुआ है और केशव उस में रहता है जो कोई इस तीर्थ की यात्रा करता है उस के सब पाप नाश हो जाते हैं ॥

हिन्दू लोग कहते हैं कि यह मन्दिर एक रात में बना था इस में पूजा की जगह एक बड़ा दालान है और छत्त ६० पत्थर के पीलपाओं पर खड़ी है और कलश १७० फीट ऊंचा है। १० हजार के करीब यात्री हरसाल इस मन्दिर के दर्शन को आते हैं ॥

द्वारका बेदी बन्दर से अग्नबोट में जाते हैं। बेदी बन्दर भावनगर गोंडाल जूनागढ़ पोरबन्दर रेलवे के जाम नगर स्टेशन से

५ मील है। भावनगर से जामनगर स्टेशन २०४ मील है तीसरे दरजे का किराया ३) लगता है॥

दांतन।

अहाता बंगाल के जिला मिदनापुर में दांतन परगने का बड़ा गांव है और बंगाल नागपुर रेलवे पर कलकत्ते से १०४ मील के फासले पर वाक़े है। कलकत्ते से तीसरे दरजे का किराया १।-)॥। लगता है। इस गांव में शमालेश्वर का मन्दिर है। जिस के दरवाजे पर एक बैल की बड़ी मूर्ति है जिस की लातें काला पहाड़ ने काट डाली थीं॥

कहते हैं कि राजा भोज ने इस मन्दिर को बनाया था। इस जगह का नाम इस वास्ते दांतन होगया है कि चैतान्या ने जगन्नाथ जाते हुये यहां दान्तन की थी पर आदुनाथ की तारीख से मालूम होता है कि यह नगर चैतान्या से बहुत पुराना है॥

इस जगह के विद्याधर और सशंकर ताल बहुत पुराने हैं। पहले कोतलिंगा के राजा मुकुन्दा देव के वजीर विद्याधर ने खुदवाया था। और दूसरेको राजा सशंकर देव ने जगन्नाथको जातेहुए खुदवाया था। कहते हैं कि इन दोनों तालाबों के बीच में धरती के नीचे रास्ता है॥

टसर और सूती कपड़े का जो मौरभंज रियासत में बनता है बड़ा बयोपार होता है॥

स्टेशन के पास अङ्गरेजों के लिये बंगला और नगर में जो स्टेशन से डेढ मील है सराय और कई धर्मशाला हैं स्टेशन पर देसी गाड़ियां सवारी के लिये अकसर मिलती हैं॥

दादार।

बम्बई बड़ोदा ऐंड सेंटरल इण्डिया और जी० आई० पी० रेलवे का जंकशन है। बी० बी० ऐन्ड सी० आई० रेलवे का स्टेशन इस स्टेशन के पासही है। दादार में मेहरा बाग़ और मट्टी के बर्तनों के कारखाने देखने के लायक़ हैं बी० बी० ऐंड सी० आई० और जी० आई० पी० रेलों के स्टेशनों के बीच में एक बड़ी अच्छी हिन्दुओं के लिये धर्मशाला है। स्टेशन के पास दो ऊन के और दो कपड़ा रंगने के कारखाने हैं॥

दादार बम्बई के विक्टोरिया टरमीनस से ६ मील और कोलाबा से ८ मील है तीसरे दरजे का किराया ~)। और ~)॥ लगता है॥

दिन्दी गुल।

मदरास अहाते के मदूरा जिला और दिन्दीगुल तालुक में नगर और साऊथ इण्डियन रेलवे का स्टेशन है। मदरास बीच स्टेशन का इस जगह से फासला ३०६ मील है और तीसरे दरजे का किराया ३।≈) लगता है। यह जगह तमाकू के वास्ते बहुत मशहूर है। दिन्दी गुल समुद्र से ६०० फीट ऊंचा है इस वास्ते यहां रातें अकसर जियादा गरम नहीं होतीं। बाईं तरफ की पहाड़ियां जिनका रुख दक्खिन की तरफ को है सिरुमलए कहलाती हैं और दाहने हाथ की पहाड़ियां छोटी पलनी कहलाती हैं। दिन्दीगुल का पुराना किला एक २८० फीट ऊंची चट्टान पर बनाहुआ है यहां बहुत सी लड़ाइयां होचुकी हैं। १७८३ में इस को अंग्रेजों ने टीपू साहिब से लिया। सपैनसर साहिब और कम्पनी का चुरटों का कारखाना नगर में है। यह नगर लोहे और कांसी के काम के वास्ते मशहूर है और यहां चमड़ा रंगने के कारखाने हैं॥

दिन्दीगुल से ३६ मील पलनी पहाड़ियों पर पलनी अन्दावरका बड़ा मशहूर पगोड़ा है। यात्री यहां दक्खिनी हिन्दुस्तान के सब हिस्सों से आते हैं। जनवरी और मार्च के महीनों में यहां तेहवार होते हैं। लूथरन ईसाइयों का मिशन और गिर्जे स्टेशन के पास हैं। रुई, प्याज, अरिण्ड का बीज, सुपारी, चुर्ट, साफ़ किया हुआ चमड़ा, बांस, जलाने की लकड़ी और शहतीर यहां से बाहर जाते हैं और चमड़ा साफ़ करने की छाल, गीला चमड़ा और नमक बाहर से आता है॥

दिन्दीगुल में देसियों के बिश्राम के लिये दो चत्तरम हैं जहां खाना भी मामूली दाम पर मिल जाता है और स्टेशन से एक मील के क़रीब अंग्रेज़ों के वास्ते बंगला भी है, इस का एक रुपया रोज़ किराया लगता है खाना स्टेशन पर सपैनसर साहिब और कम्पनी के रिफ़रेशमेन्ट रूम से मिल सक्ता है। पलनी पर देसियों के लिये कई चत्तरम और अंग्रेज़ों के लिये बंगले हैं॥

घोड़े और बैल गाड़ियां दिन्दीगुल में पलनी जाने के लिये मिलती हैं। घोड़े का किराया ५) और बैलगाड़ी का ३) लगता है॥

पलनी जाने वाले मुसाफ़रों को अम्मायनायाकनूर स्टेशन उतरना चाहिये वहां स्टेशन पर ठहरने की जगह है और खाना मिल सक्ता है। बैलगाड़ियां किराये पर मिलती हैं और पलनी में पहाड़ी पर जाने के लिये तांगे और सवारी के घोड़े मिलते हैं॥

अम्मायनायाकनूर मद्रास बीच स्टेशन से ३२२ मील है तीसरे दरजे का किराया ३॥-) लगता है॥

दिल्ली ।

जमुना जी के पश्चिमी किनारे पर कलकत्ते से ९०३ मील, बम्बई से जी० आई पी० रेलवे में ९५७ मील और अगारे से १२२ मीलके फ़ासले पर वाक़े है। बी० बी० ऐण्ड सी० आई० ईस्टइण्डियन, अवधरुहेलखण्ड, जी० आई पी और नार्थवैस्टर्न रेलवे का जंकशन है, तीसरे दरजे का किराया ८~)॥, ९॥।ऽ) और १॥~) लगता है। यह शहर पुराने ज़माने में हिन्दुस्तान की राजधानी था अब सूबा पंजाब में ज़िला और कमिश्नरी दिल्ली का सिवल सदर मुक़ाम है। असली शहर दिल्ली या दिल्लीपुर कहलाता था और उसको राजा दिल्लू नए शहर से ५ मील के फ़ासले पर अंग्रेज़ी सम्बत से ५० साल पहले बसाया था पर हिन्दू और मुसलमानों के राज में इस की जगह बहुत दफ़ा बदली और पुराने शहरों के खण्डर नए नगर के दक्खिन और दक्खिन पूर्व की तरफ़ ४५ मील चारों तरफ़ फैले हुए हैं। नए नगर को शाह जहानबादशाह ने बसाया था और उस के नाम पर यह नगर शाहजहान आबाद कहलाता था। बारहवीं सदी ईस्वी तक वह नगर हिन्दुओं के पास रहा और फिर मुसलमानो के हाथ आया और बहुत से हेर फेर के बाद सरकार अंग्रेज़ी के क़बज़े में आ गया और उस वक़्त से इसमें बड़ी रौनक़ हो गई है। क़ुतब साहिब की लाट दिल्ली से ११ मील दक्खिन की तरफ़ है। यह मीनार गाओदुम बना हुआ है और २३८ फ़ीट ऊंचा है और जगत के सब मीनारों से ऊंचा है। चोटी पर जाने के लिये ३७९ सीढ़ियां बनी हुई हैं और ऊपर से दूर दूर तक बड़ा अच्छा नज़ारा दिखाई देता है इस लाठ के पास एक और धात की लाठ २३ फ़ीट ८ इंच ऊंची है। कहते हैं इस को हिन्दूओं ने ३१९ ई० में बनाया था यह लाठी जगत में निराली है, इस का बोझ १७ टन याने ४७६ मन के क़रीब है। इसको फ़िरोज़ शाह की लाट कहते हैं॥

लाल किले के गिर्द एक डेढमील दीवाल बनी हुई है इस किले में दीवान खास है जो देखने के लायक़ है यह संगमरमर का बना हुआ है और उस में बड़ी सुन्दर पच्चरकारी की हुई है इसी दीवान में तख़्त ताऊस था जिस को नादरशाह दुर्रानी १७३९ में ईरान ले गया। इस तख़्त का मूल ३ करोड़ रुपया बताते है। दीवान खास के पास बड़ी सुन्दर मोती मसजिद है॥

कश्मीरी और दिल्ली दर्वाजों के बीच में जूमा मसजिद है जो हिन्दुस्तान की सब मसजिदों से खूबसूरत है। स्टेशन के पास कम्पनी बाग़ और उस में अजायब घर भी सैर की जगह है। हुमायूं का खूबसूरत मुक़बरा शहर के दक्खिन की तरफ दो मील पर है। वह मक़बरा लाल पत्थर का बना हुआ है, और उस में चिट्टे पत्थर से पच्चरकारी की हुई है। दिल्ली में और जगह देखने के लायक यह हैं॥

(१) जनरल निकलसन और उस के साथियों का मीनार जी० आई० पी० के दिल्ली सदर स्टेशन के साम्हने

(२) सफदर जंग का मक़बरा।

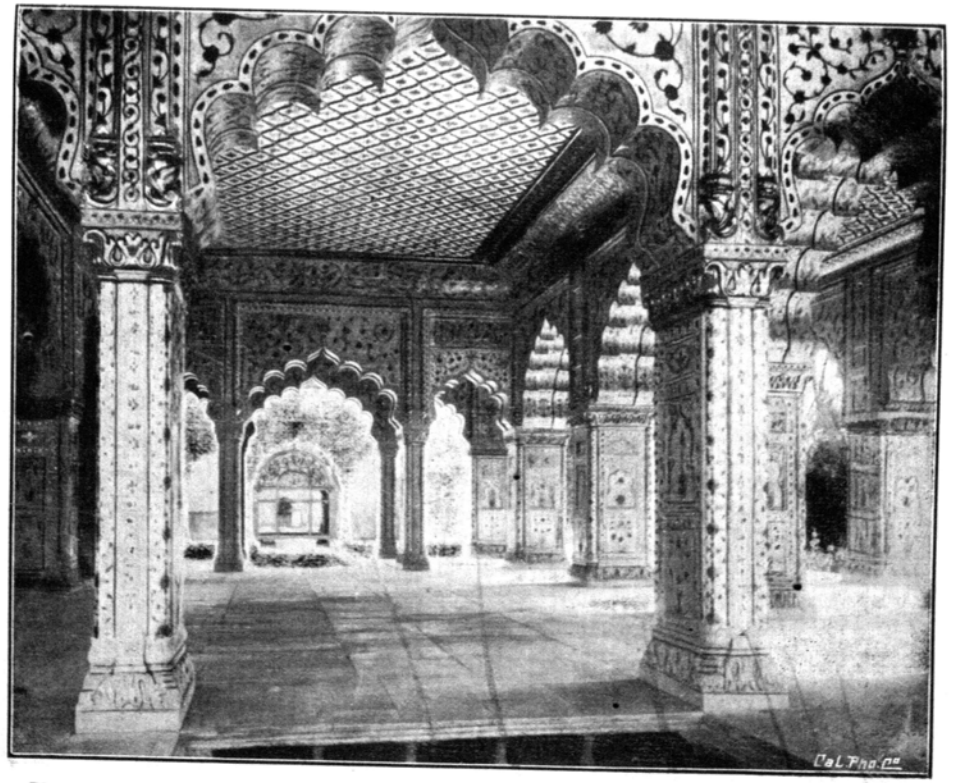
(३) शाही हम्माम।

(४) काली मसजिद पठानों के राज में बनी थी।

(५) अमीर खुसरो का मक़बरा।

(६) निकलसन का बाग और अंग्रेजों का कबरिस्तान।

दिल्ली की फसील ५॥ मील है और उस में दस दरवाजे हैं। शहर में जमना दरिया की नहर है शहर में वाटर वर्क्स से पानी लाया जाता है। चांदनी चौक दिल्ली का बड़ा खूबसूरत बाज़ार है इस में जगह २ के लोग भांत २ के कपड़े पहने हुए नज़र आते हैं॥



Photo' erh.by rneuq odand Shep, Calcutta

दीवाने ख़ास—देहली।



Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

हुमायूं का मक़बरः—दिल्ली।

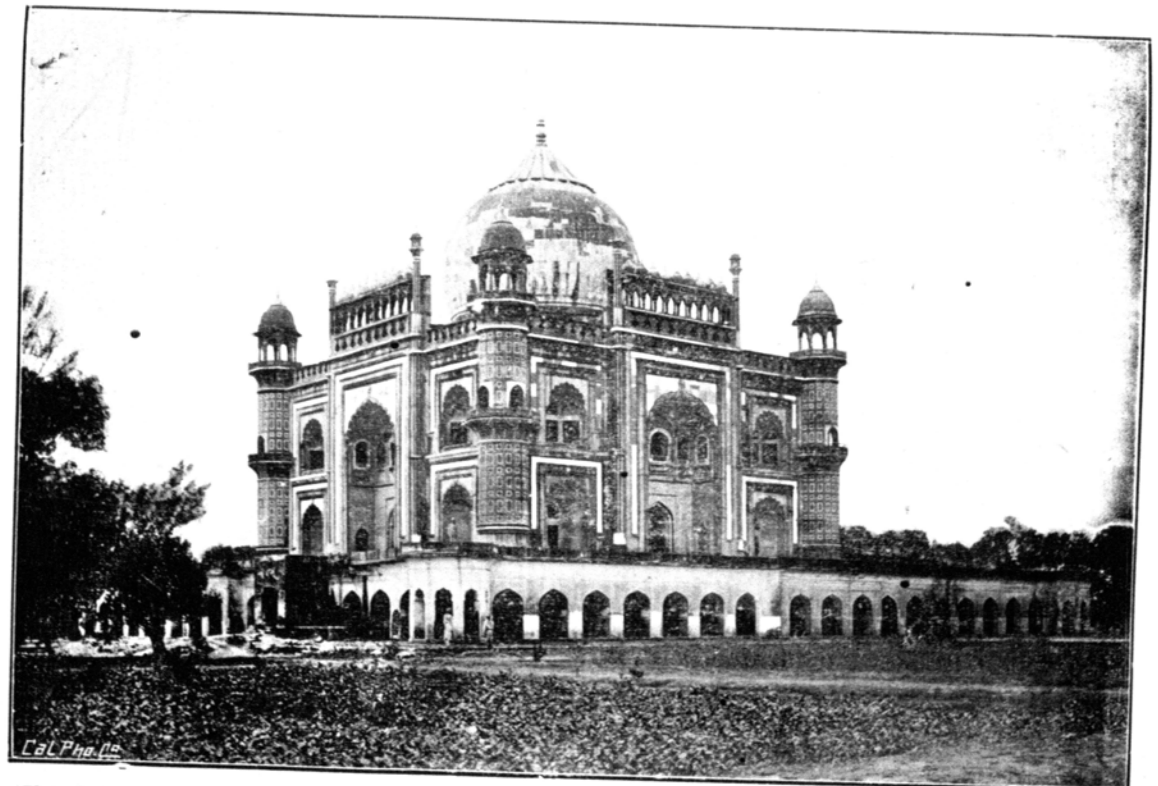


Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

सफ़दर जंग का मक़बर:—देहली।

दिल्ली से ११ मील मैहरोली में पुरानी दिल्ली के क़रीब हिन्दुस्तान में सब से अच्छा फुलों की सैर का मेला होता है जिस में हज़ारों लोग दूर २ से आते हैं ॥

दिल्ली में कई रुई कातने, आटा पीसने, बिसकुटों वगैरा के बहुत से कारखाने हैं और ज़रदोज़ी और चांदी सोने के काम के लिये मशहूर है ॥

इस जगह देशियों के लिये कई अच्छे होटल और स्टेशन के पास बहुत सराये हैं । स्टेशन से चौथाई मील के फ़ासले पर लाला छुन्नामल की धर्मशाला है इस में मुसाफ़िरों से किराया नहीं लियाजाता । खाना भी मामूली दाम पर मिल जाता है दिल्ली में सवारी हर वक़्त मिलती है ॥

दीद करुगोद

सदरन मरहटा रेलवे पर स्टेशन और गांव है । इस जगह दरया के किनारे पर एक बड़ा पुराना अंजीर का रूख है जिसको विदुरसाव-स्थम कहते हैं । चार हज़ार बरस हुये इस रूख को विदुरा ने लगाया था कहते हैं कि इस रूख के मन्दिर की यात्रा करने से यात्रियों के बड़े २ रोग दूर होजाते हैं इसी सबब से यह बड़ी तीर्थ की जगह है ॥

स्टेशन के पास एक बंगला है और एक मील के करीब दो धत्तरम हैं ॥

दीद कुरुगोद बङ्गलोर स्टेशन से ५१ मील है तीसरे दरजे का किराया ॥-) लगता है ॥

देवगढ़ ।

बंगाल अहाते के संथाल परगना में देवगढ़ सब डिविज़न का सदर मुकाम है और ईस्ट इण्डियन की कार्ड लाईन से ४ मील पर है यहां शिवजी के २२ मन्दिरों का एक कुण्ड है जिस की यात्रा को लोग हिन्दुस्तान के दूर २ हिस्सों से आते हैं । सब से पुराने मन्दिर को बैद्यानाथ कहते हैं । इस में शिवजी के १२ सब से पुराने लिंग में से एक लिंग है । इस जगह तीन बड़े मेले हरसाल होते हैं। भद्र पूर्णिमा का मेला सितम्बर के महीने में १५ दिन तक होता है, श्री पंचमी का मेला दिसम्बर और जनवरी में एक महीने तक होता है, और शिवरात्रि का मेला फरवरी में होता है । इन मेलों पर ३० से ४० हज़ार तक लोग आते हैं ॥

मेले के दिनों में लोग प्रोहतों के घरों में और गवरमेंट की बनाई हुई झोपड़ियों में ठहरते हैं । नगर स्टेशन से आधे मील पर है और इस में दो धर्मशाला हैं ॥

देवगढ़ ईस्ट इंडियन रेलवे में कलकत्ते से २०५ मील है तीसरे दरजे का किराया २॥) लगता है ॥

देवबन्द ।

ज़िला सहारनपुर में नार्थ वेस्टर्न रेलवे पर मुज़फ्फ नगर से १५॥ मील उत्तर की तरफ एक कसबा और मिऊनसिपेलटी है, कसबे से आधे मील के फासले पर एक छोटी सी झील है जिस को देवी कुण्ड कहते हैं इसके किनारों पर मन्दिर, घाट और सतियों की छतरियां हैं यात्री लोग यहां बहुत आते हैं देवबन्द एकपुराना कसबा है पहले इस को देववन याने पवित्र जंगल कहते थे । बस्ती के पास

जंगल में जहां देवी का मन्दिर है अब भी मेला होता है । पांडवों ने अपने बनबास का पहला हिस्सा इस कसबे के पास गुजारा था॥

यहां से अनाज, चीनी और तेल बाहर जाता है बारीक कपड़ा भी बनता है॥

नगर में जो स्टेशन से डेढ़ मील है एक आश्रम है टेशन पर यक्के गाड़ी के वक्त मुसाफिरों को नगर लेजाने के लिये मिलते हैं। नगर तक एक सवारी का ~) किराया लगता है॥

देवबन्द लाहौर से २५१ मील और दिल्ली से ६० मील है तीसरे दरजे का किराया ३)॥ और १~) लगता है॥

देवलवाड़ा।

अहाता बम्बई के वर्द्धा जिले और अरवी तहसील में वर्द्धा दरिया पर और अरवी से ६ मील पश्चिम की तरफ एक छोटा सा गांव है। यह गांव मेले के सबब मशहूर है जो नवम्बर के महीने में दरिया पर होता है। मेला २० से २५ दिन तक रहता है और इन दिनों यात्री और ब्यौपारी नागपुर, पूना, नासिक, जब्बलपुर से रुकमनी देवी के मन्दिर के दर्शन को अनगिनत आते हैं और ब्योपार भी बहुत होता है। देवलवाड़ा के ठीक सामने कुन्दनपुर नगर था जिसके विषयमें पवित्र पुस्तक और भागवत के दसवें अध्याय में लिखा है के विदरभा (वरधा) दरयासे अमरावती तक फैलाहुआ था और विधरवा देशपर भीमक राजा राज करता था इस राजा ने अपनी पुत्री का शिवजी के साथ विवाह कर दिया था॥

इस गांव के पास अरवी रोड स्टेसन है जो सदरन महट्टा रेलवे पर पूना से ६० मील है। पूना से अरवी तक तीसरे दरजे का किराया १)॥ है॥

अरवी में बैल गाड़ियां सवारी के लिये मिलती हैं। देवलवाड़ा में कोई सराय या धर्मशाला नहीं यात्री दरया के किनारे पर खुले मैदान में ठहरते हैं॥

देवीपटन।

अवध के जिला गोंडा में गांव है। यहां बहुत से मन्दिर हैं और एक बड़ा मेला दस दिन तक होता है जिस में एक लाख के करीब यात्री और ब्योपारी आते हैं। कहते हैं कि हिन्दुस्तान के उत्तर के हिस्से में यह सब से पुरानी शिवजी के मानने वालों की जगह है और इस को राजा कर्ण कुन्ती के पुत्र के साथ भी लगाओ है। राजा कर्ण अपने पालने में गंगा जी के किनारे छोड़ दिया गया था और उस को राजा अदिरथ ने जिस के कोई बच्चा नहीं था कर्ण को अपना पुत्र बना लिया था। जब बड़ा हुआ दरोना ने उस को ब्रह्म के हथियार न दिये क्योंकि वह हस्तनापुर के दर्बार में पला था कर्ण ने परसराम की सेवा करके आखिर हथ्यार ले लिये। पीछे वह दुर्योधन के साथ जिसका जिकर महाभारत में है स्वामीवाड़ा गया और बड़ी लड़ाई में सूरमापन दिखाने के सबब मगध के राजा जरासिन्धु ने मलीनी शहर उस को दे दिया। मेले में पहाड़ी टट्टू, कपड़ा, कलड़ी चटाई, घी, लोहा दालचीनी का ब्योपार होता है। मेले के दिनों में बहुत से भैंसे बकरे और सूअर मन्दिर में बलि दिये जाते हैं॥

धम्मनगांव।

यह नगर बड़े ब्योपार की जगह होता जाता है। इस में कई रुई निकालने और दबाने के कारखाने हैं। और वून जिले के सिवल सदर मुकाम ये ओतमल के वास्ते स्टेशन है। ये ओतलम यहां

से २६ मील है और उस में डिप्टी कमिश्नर की कचहरी हैं। ये ओंतलम में रुई दबाने और निकालने के कारखाने हैं। पले गांव में जो ८ मील परे है रुई निकालने की एक कल है और अजोनीसिंह में ७ मील और परे एक रुई निकालने की कल है। मारच महीने के करीब बागा जी हुआ का मेला यहां से १२ मील वारूद गांव में होता है। यह मेला १५ दिन तक रहता है और इस में बहुत व्योपार होता है। डाकखाने की तरफ से तांगे चलते हैं जिन में मुसाफरों को भी जगह मिलसक्ती है॥

स्टेशन पर वेटिंरूम बना हुआ है और पास ही एक बंगला और ३ धर्मशाला हैं। धम्मन गांव में बारूद जाने के लिये ३) किराया पर बैल गाड़ियां मिलती हैं॥

धम्मनगांव जी० आई० पी० रेलवे में बम्बई से ४४१ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ६॥=) और सवारी गाड़ी में ४॥=) लगता है॥

धूलिया।

खानदेश की कलकटरी का हैडकुआरटर और जी० आई० पी० रेलवे पर बड़े व्योपार की जगह है। यहां हरसाल पंजरा दरिया के किनारे एक बड़ा मेला होता है। धूलिया से २४ मील के फासले पर सुलतानपुर और उस के किले के खण्डर बहुत मशहूर हैं। दो मील परे एक अनूठा कुंआ है इसका गुम्बद और सीढ़ियां देखने के लायक हैं। धूलिया से ४० मील के फासले पर पिम्पलनीर जगह है जिस में बहुत सी पुरानी चीज़ें देखने के लायक हैं उन में से पाखसेन का पुराना मन्दिर और कई खोहें बहुत अजीब हैं। इन में

से पत्थर की मूर्तियां निकलती हैं। धूलिया से ३५ मील भामर की खोहें भी देखने के लायक हैं॥

धूलिया बम्बई से चालीस गाऊ के रस्ते २३६ मील है तीसरे दरजे का किराया ३॥~) लगता है॥

धौलपुर।

चम्बल दरया पर रियासत धौलपुर की राजधानी है। महाराना साहिब और पुलिटिकल एजण्ट साहिब इसी जगह रहते हैं। शाहजहान के जमाने की १६३६ की बनी हुई एक बड़ी भारी मसजिद है और एक मुसलमान महात्मा का मकबरा है॥

कहते हैं कि असली नगर को राजा धौलन देव ने ग्यारहवीं सदी ई० में बसाया था। बाबर बादशाह लिखता है कि उसने धौलपुर को १५२६ ई० बी० में फतह किया और उसके बेटे हुमायूं ने दरया से बचाने के लिये नगर को परेजा बसाया। एक पक्की सराय अकबर के जमाने की बनी हुई है। नगर का नया हिस्सा और राना साहिब के महल राना कीर्तसिंह ने बनाये थे। अक्तूबर में यहां श्राद्ध पूरा मेला १५ दिनतक होता है और उन दिनोंमें घोड़े, पशू और और वस्तु का बड़ा व्यौपार होता है धौलपुर से दो मील के करीब मचूदेव का पवित्र ताल है जो कृष्ण जी का ताल माना जाता है। स्टेशन पर अच्छे वेटिंगरूम बनेहुये हैं॥

धौलपुर जी० आई० पी० रेलवे में बम्बई से ८०४ मील और दिल्ली से १५४ मील है तीसरे दरजे का किराया सवारी गाड़ी में ६॥) और २)और डाक गाड़ी में १०।~) और २॥) है॥

नवसरी।

पारसी प्रोहता का सदरमुकाम है और यहां अग्नि का एक

मन्दिर है जहां जवान मोबद यानें प्रोहत पक्के होने के लिये भेजे जाते हैं। स्टेशन पर वेटिंग रूम है और पास एक धर्मशाला है॥

वह स्टेशन बी० बी० ऐंड सी० आई० रेलवे पर बम्बई से १४९ मील है तीसरे दरजे का किराया १॥) लगता है॥

नवाबगंज।

अवध के उन्नाव ज़िले में लखनऊ की सड़क पर उन्नाव से १२ मील उत्तर पूर्व की तरफ एक नगर है। पहले यहां थाना और तहसील थी जो अब उठा लिये गए और नगर में वह रौनक़ नहीं रही। चैत्र के महीने के आख़ीर में दुर्गा और कुसाहरी देवी का मेला होता है जिस में इर्द गिर्द के लोगों के सिवाय कानपूर और लखनऊ से बहुत लोग आते हैं॥

उन्नाव बङ्गाल नार्थ वैस्टरन रेलवे की काठिहार कानपुर शाख पर कानपुर से १३ मील है तीसरे दरजे का किराया ≶) लगता है। उन्नाव में नवाबगंज जाने के लिये सवारी मिलती है॥

नरसिंहपत।

साऊथ इण्डियन रैलवे पर मदरास बीच जंकशन से १८६ मील एक स्टेशन है। इस का मदरास बीच से तीसरे दरजे का किराया २~) लगता है यहां से क़रीब दो मील पूर्व की तरफ शिवजी के अधीन शूद्रों का प्रोहत थम्बीरन थीरुबदुथीरई में रहता है। शिवजी के मन्दिर में यहां हर साल जनवरी के महीने में ब्रह्म उतशवम तेहवार होता है। स्टेशन से एक मील उत्तर की तरफ थुगिलि गांव में देशी कपड़ा बहुत अच्छा बनता है॥

नलासोपारा ।

बी० बी० एन्ड सी० आई० रेलवे पर बसीन रोड स्टेशन से तीन मील के फासले पर एक स्टेशन और ब्योपार की जगह है। इस स्टेशन से ५ मील पश्चिम की तरफ़ निर्मल जगह है जहां ८ मन्दिर हैं। कहते हैं यहां एक बड़ा शंकराचार्य दबा हुआ है जिस की यादगार में नवम्बर के महीने में एक हफ़ते तक बड़ा भारी मेला होता है, जिस में कई हज़ार यात्री थाना, गुजरात, बम्बई, दक्खिन और दक्खिनी कोनकन से आते हैं। स्टेशन से डेढ़ मील के फ़ासले पर जिरंधन पहाड़ी भी पवित्र मानी जाती है इस पर क़िलों के खण्डर और कई बहुत पुरानी खोहें हैं जिनको कहते हैं पांडवों ने बनाया था। मेले के दिनों में लोग, ख़ासकर बांझ औरतें इन खोहों में जाकर एक देवता को चढ़ावे चढ़ाते हैं कहते यह देवता एक मनिहार के छूने से इसी जगह एक ताक में अलोप हो गया था॥

स्टेशन के पास तुन्घर पहाड़ी भी पवित्र समझी जाती हैं, इस के ऊपर ४ मन्दिर हैं जिनको बसीन के सर सूबेदार ने बनाया था। ग़रीब लोग जो मथेरन पर ज़ियादा खर्च के सबब नहीं जा सकते इस पहाड़ी पर आबहवा बदलने के लिये जाकर रहते हैं इस पहाड़ी पर शेर रीछ साम्भर और जंगली सूअर भी पाए जाते हैं।

इन के सिवा सोपार के पास बुद्ध लोगों का स्टूपरा जिसको उस जगह के लोग बरुध राजा का कोट कहते हैं, बड़ा अजीब है। सर जेम्स कैम्पबेल और पण्डित भगवन लाल ने इस स्टूपे को १८८२ में मालूम किया था॥

निर्मल में तीन या चार धर्मशालाएं हैं और सोपारा में भी ठहरने की बहुत जगह हैं॥

नल्ला सोपारा दिल्ली से ८१३ मील और बम्बई से ३६ मील है तीसरे दरजे का किराया ८॥) और ।७)॥। लगता है।

नानिलम ।

अहाता मदरास के ज़िला तंजोर में तअलुक और साऊथ इण्डियन रेलवे का स्टेशन है और स्टेशन पर पहिले और दुसरे दरजे के मुसाफिरों के लिये वेटिंगरूम हैं। इस जगह ३ या ४ मील के अन्दर थीरुपुगुर तीरुकन्नापुरम, थीरुचेंगातनगुदी ? श्रीवनविजयम और तीरुपनायूर पवित्र स्थान हैं। इन को जाने के लिये बैल गाड़ियां ननिलम में सवारी के लिये मिलती हैं। इन सब स्थानों में यात्रियों के लिये जगह बनी हैं ननिलम में भी धर्मशालाय और अंगरेज़ों के लिये बंगला है ननिलम से धान और चावल बाहर जाते हैं।

ननिलम मदरास बीच स्टेशन से १६२ मील है तीसरे दरजे का किराया२७) लगता है॥

नरसिंहपुर ।

जी० आई० पी० स्टेशन पर वेटिंगरूम और दो मील के फासले पर एक डाक बंगला है और नगर में स्टेशन से ३ मील देशी मुसाफिरों के वास्ते एक सराय है नरसिंहपुर डिप्टी कमिश्नर का सदर मुकाम है और यहां कुछ व्योपार भी होता है। यहां से १४ मील बीरमन में हर साल दरिया नर्बदा के किनारे पर एक मेला होता है। नरसिंहपुर में भी एक मन्दिर है जिस को नरसिंह जी कहते हैं। यह नगर बड़ा मशहूर है गोंड लोगों सागर के मरहट्टों का सभा है नागपुर के भोंसला राजों और अंग्रज़ों के पास रहा है। नागपुर के राजों से जरनैल हार्डीमैन ने इसको १८१७ ई० में लिया था। सवारी मिलती है॥

नरसिंहपुर जी० आई० पी० रेलवे को बम्बई जब्बलपुर लाइन पर बम्बई से ५६४ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक-गाड़ी में ८॥।-) लगता है सवारी गाड़ी में ५॥।=) लगता है॥

नासिक।

पश्चिमी हिन्दुस्तान का बनारस है, गोदावरी दरिया के किनारे पर वाके है और ऐसा ही पवित्र समझा जाता है जैसा बनारस गंगा जी के किनारे पर कहते हैं कि इस दरिया का पवित्र होना गोतम ऋशि ने रामचंद्र जी को बताया था कि यह दरिया उसी जगह से निकलकर धरती के नीचे २ आता है जिस से गंगा जी निकलती है इस दरया का हर एक हिस्सा पवित्र है और इस में स्नान करने से बड़े से बड़ा पाप नष्ट हो जाता है. दरया के किनारों पर स्थान, मन्दिर, धर्मशालायें और पत्थर की सीढ़ियां यात्रियों और स्नान करने वालों के लिये बनी हुई हैं। कहते हैं कि रामचन्द्र जी ने अपने बनबास का बड़ा हिस्सा यहां गुज़ारा था॥

पंचवटी का मन्दिर सारे पश्चिमी हिन्दुस्तान में मशहूर है. यह पांच बड़ के दरख़्तों के नीचे बना है और दरिया के पूर्बी किनारे पर शहर से आधे मील के फ़ासले पर है इसी मन्दिर को नासिक कहते हैं क्योंकि लक्ष्मन जी ने सरुपनखा का नाक इसी जगह काटा था, यहां शिवजी का मन्दिर है जो सब से पुराना है और बालाराम का मन्दिर सब से खूबसूरत है. पंचवटी का कुण्ड रामचन्द्र जी का कुण्ड कहलाता है क्योंकि वह यहां नहाया करते थे॥

नासिक में अंगूर और तरकारियां बड़ी अच्छी होती हैं और ताम्बे और पीतल का बड़ा व्योपार होता है॥

नासिक जी० आई० पी० की बम्बई दिल्ली लायन पर बम्बई से ११७ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में १॥~) और दूसरी गाड़ी में १।) है॥

नाथद्वारा।

उदयपुर रियासत में उदयपुर नगर से २२ मील बनास नदी के दाहिने किनारे पर एक नगर है इस नगर में हिन्दुस्तान में सब से मशहूर विष्णु का मन्दिर है कहते हैं कि इस मन्दिर में कृष्णजी की असली मूर्त्ति है जिसकी मथुरा में पूजा होती थी १६७१ ई० में० उदयपुर का राना राजसिंह इस मूर्ति को बड़ी धूम से कोटाह और रामपुर के रास्ते मेवाड़को लाया पर जब मेवाड़ की हद में पहुंचे तो दिलवाड़ा के गांव सियार में देवता के रथ के पहिये फंस गए। दिलवाड़ा के राओ जो मेवाड़ के १६ बड़े सरदारों में से था बोल उठा कि कृष्णजी ने इस शुभ से बता दिया कि वह इसी जगह अपना स्थान बनाना चाहते हैं और गांव की सारी जमीन नाथजी के नाम कर दी। मूर्ति के लिये एक मन्दिर बनाया गया जिस के गिर्द एक बड़ा नगर बस गया और उसका नाम नाथद्वारा अर्थात् कृष्ण जी का द्वारा होगया। इस मन्दिर की हद में जीवहत्या नहीं होती और अपराधी को यहां कोई नहीं पकड़ सक्ता। अनगिनत यात्री यहां आते हैं और अच्छे अच्छे चढ़ावे चढ़ते हैं॥

मोर्वी रेलवे पर मूली स्टेशन नाथद्वारा से १५ मील है और मूली बम्बई (कोलाबा) से वीरमगाम और वधवान जंकशनों के रास्ते ४०३ मील है तीसरे दरजे का किराया ४।~)॥ लगता है॥

नागपुर ।

सूबाजात मुतवस्सत के चीफ कमिश्नर, जूडीशल कमिश्नर और सब महकमों का सदर मुकाम है । यहां दो रुई कातने और कपड़ा बुनने के कारखाने हैं एक का नाम एम्प्रेस और दूसरे का स्वदेशी हैं। एम्प्रेस देखने के लायक है। नागपुर में आम लोगों की सैर का बाग़ और सड़कें अच्छी हैं और आस पास कई तालाब और झीलें हैं जिन में से नगर में पानी आता है। यहां रुई दबाने और रुई निकालने के कारखाने भी हैं। नागपुर के सिविल स्टेशन को सीता बर्दी कहते हैं और इसी नाम का क़िला नगर के सिर पर है। इसी पहाड़ी पर १८१७ में वहां के राजा आपा साहिब भौंसला ने नागपुर के रेज़ीडेण्ट पर धावा किया था पर जरनैल गोहन साहिब ने थोड़े से आदमियों के साथ राजा को भगा दिया और थोड़े दिनों बाद जब मदद आ पहुंची तो जैनकिन साहिब ने राजा को ताबे कर लिया। सीताबर्दी का किला १८१८ में बना था यह क़िला देखने के लायक हैं इसमें बहुत से पुराने हथियारों के नमूने हैं ॥

नागपुर में अजायबघर जिस में एक अच्छी पुस्तकशाला भी है, महाराजा का बाग़ शहर में तुलसी बाग़ सोना गाओं में पलटी कराटी और बाहर तेलनकेरी सब देखने के लायक़ हैं नागपुर में हिसलाप और मारिस दो कालिज और कई स्कूल हैं। नागपुर के संगतरे सारे हिन्दुस्तान में मशहूर हैं और बम्बई, हैदराबाद दक्खिन, कलकत्ता, दिल्ली और दूसरी जगह को बहुत जाते हैं। शहर में अभी एक सुन्दर टाऊनहाल बना है जिसका नाम सर अनटनी मेकडानल पहले चीफ़ कमिश्नर के नाम पर है। नागपुर से अनाज सागन की लकड़ी बाहर जाती है ॥

नागपुर बंङ्गाल नागपुर आर जी० आई० पी० रेलों का जंकशन है। इस का फासला कलकत्ते से ७०१ मील और बम्बई से ५२० मील है तीसरे दरजे का किराया ७॥) और ४।=) लगता है॥

निद्बन्दा।

सदर्न मरहट्टा रेलवे पर शिवगङ्गा पवित्र पहाड़ी को जाने के लिये सब से पास रेल का स्टेशन है। यह पहाड़ी गाओदुम्म सूरत की है और उसकी खोहों में कई बड़े बड़े मन्दिर हैं पहाड़ी के चाक में एक पवित्र बेथाह तालाबहै जिस को पाताल गङ्गा कहते हैं एक में से दक्षिणाबन सूर्य के दिन पानी रिस्ता है जिस को हिन्दू लोग आश्चर्य काम समझते हैं। माघ (जनवरी) के महीने में मकर शंकान्ती को बड़ाभारी मेला होता है जिस में हजारों लोग आते हैं॥

यात्रियों के विश्राम के लिये पहाड़ी पर २ धर्मशालायें हैं निद्बन्दा में इस पवित्र पहाड़ी को जाने के लिये बैलगाड़ियां और यक्के मिलते हैं॥

निद्बन्दा पूना से ५६७ मील है तीसरे दरजे का किराया ७॥)॥ लगता है॥

नोयल।

मदरास अहाते के जिला कोयम्बाटोर में करूड़ से १५ मील के फ़ासले पर वाक़े है। इस स्टेशन से करीब १०० गज के फासले पर सेल्लनुदियम्ममकोईल मन्दिर है जहां हरसाल मार्च के महीने में एक तेहवार होता है और मन्दिर के पास शनिश्चर के दिन मेला होता है॥

नोयल साऊथ इण्डियन रेलवे की इरौद शाख के रास्ते मद्रासब्रांच जंकशन स्टेशनसे ३१२ मील है तीसरे दरजे का किराया ३।≡) लगता है ॥

स्टेशन के पास देशियों के लिये टिकने की जगह है जिस का चत्रदी कहते हैं और आधे मील के फासले पर अङ्गरेजों के लिये बंगला है ॥

नैनी ।

ईस्ट इण्डियन रेलवे का स्टेशन और जब्बलपुर शाख का जंकशन है, नैनी के करीब एक मील पश्चिम की तरफ जमना जी बहती हैं और उस के ऊपर बड़ा अच्छा रेल का पुल और रास्ता बना है। जब्बलपुर लैन के बहुत से यात्री नैनी में उतर कर जमना जी के स्नान करते हैं ॥

स्टेशन के पास उत्तर की तरफ लाला बिहारीलाल कुञ्जलाल सिंहानिया की बनाई हुई देशी मुसाफ़िरों के लिये धर्मशाला है जहां कंगालों को दान पुण्य किया जाता है। स्टेशन के बाहरही एक सराय है ॥

नैनी कलकत्ते से ५०६ मील है तीसरे दरजे का किराया ५)। लगता है ॥

नौलास ।

सूबा पंजाब की पटियाला रियासत के राजपुरा जिला और तहसील में गांव है। शिवरात्री के मौके पर फर्वरी में यहां दो दिन तक मेला होता है जिस में ३ हजार के करीब लोग आते हैं। गांव में एक मामूली धर्मशाला है। राजपुरे में नौलास जाने के लिये बैल गाड़ियां मिल सकती हैं ॥

राजपुरा नार्थ वैस्टरन रेलवे का स्टेशन है । इस का फ़ासला लाहौर से १७० मील है तीसरे दरजे का किराया २) लगता है ॥

पपानसम ।

साऊथ इण्डियन रेलवे की बड़ी लायन पर मदरास बीच जंकशन से २०५ मील के फ़ासले पर एक स्टेशन है। मदरास बीच से यहां तक तीसरे दरजे का किराया २।-) लगता है ॥

मार्च और अपरैल के महीने में यहां हर साल ब्रह्मऊतशावंम का तेहवार बिष्णु के मन्दिर में होता है। और एक शिवजी के पुराने मन्दिर में १०८ लिंग हैं। कहते हैं कि रामचन्द्र जी ने रावण को मारने के बाद लंका से लौट कर राक्षसों को मारने के दोष से अपने आप को साफ़ करने के लिये इसी जगह पूजा की थी। इस जगह रोमन कैथलिक ईसाईयों का गिर्जा भी है ॥

परामककुदी ।

साऊथ इण्डियन रेलवे की मन्दापम बरांच पर मदरास बीच स्टेशन से ३६३ मील के फ़ासले पर एक स्टेशन है। मदरास बीच से यहां तक तीसरे दरजे का किराया ४॥-) लगता है ॥

उत्तर की तरफ़ पन्दीकनमोई और परामकुदी के बीच में नैनरकोईल मशहूर मन्दिर है। यहां मई के महीने में चित्रई तेहवार होता है और हर बृहस्पति के दिन एक मेला होता है। स्टेशन पर रिफ़्रेशमेण्ट रूम और आधे मील के फ़ासले पर बंगला है और चौथाई मील के फ़ासले पर अस्पताल है। इस जगह मुनसिफ़ और सब मैजिस्टरेट की कचहरियां भी हैं ॥

पम्बान।

साऊथ इण्डियन रेलवे की रामेश्वर शाख पर स्टेशन है। यात्री लोग यहां से अगिनबोट में मन्दापम और वहां से रामेश्वरम जाते हैं स्टेशन के पास लोकल फराड की चोलतरी याने टिकने की जगह है। भैरवा और फपी थीर्थम भी जो स्टेशन से आध मील उत्तर की तरफ है पवित्र माने जाते हैं॥

पम्बान बीच स्टेशन मदरास बीच जंकशन से ४४१ मील है तीसरे दरजे का किराय ४॥।=) है॥

पल्लावर्म।

पल्लावर्म छावनी में देसी पलटन रहती है। नगर के पूर्व की तरफ ४०० या ५०० फीट ऊंची पहाड़ियां हैं॥

पुराने सिपाही और बहुत से अंगरेज़ प्रैनशन लेकर यहां रहते हैं। इस जगह कंकर की खान भी है जिन में से अच्छा कंकर निकलता है और बहुत सा कंकर मदरास बन्दर बनाने के लिये यहां से गया था। स्टेशन से तीन मील के करीब रघुनाथ स्वामी का मशहूर मन्दिर है जिसका मेला मई में होता है और हजारों यात्री आते हैं। पल्लावर्म से मदरास को कई लोकल गाड़ियां जाती हैं। स्टेशन पर पहिले और दूसरे दरजे के मुसाफिरों के वास्ते वेटिङ्गरूम बना हुआ है। यहां इण्डियास्टीर कम्पनी की एजन्सी भी है॥

पल्लावर्म साउथ इण्डियन रेलवे की मदरास टूटी कारन लाइन पर मदरास बीच स्टेशन से १४ मील है तीसरे दरजेका किराया डाक गाड़ी में ≈) और सवारी गाड़ी में =)॥ लगता है॥

पटन ।

बम्बई बड़ोदा रेलवे का स्टेशन और बड़ोदा रियासत में सरस्वती नदी के किनारे पर पटन सब डिविज़न का बड़ा नगर है बड़ी आबादी इस नगर में जैनियों की है जिनके १०८ मन्दिर हैं उनकी यहां कई बड़ी बड़ी पुस्तकशालाये हैं जिनमें बहुत पुस्तकें खजूर के पत्तों पर लिखीहुई हैं, इनकी बड़ी खबरदारी होती है पटन गुजरात में सबसे पुराना और मशहूर नगर है इस के बाहर कई खण्डर अच्छे अच्छे मकानों के अब तक मौजूद हैं ॥

अङ्गरेजी सम्बत् ७४६ से ११६४ तक कई राजपूत राजों की राजधानी रही और मुसलमानों के राज्य में भी बड़ा नगर था, नगरमें तलवारें, भाले और मिट्टी के बर्तन और रेशम रुई का कपड़ा बनता है।

नगर स्टेशन से आधे मील के फासले पर है उस में जैनियों के लिये एक धर्मशाला है। स्टेशन पर यके और बैलगाड़ियां किराये पर मिलती हैं किराया ।) लगता है ॥

पटन बम्बई से अहमदआबाद और मैहसाना के रस्ते ३७८ मील है तीसरे दरजे का किराया ४-)॥ लगता है ॥

पटना या अज़ीमाबाद ।

बंगाल अहाते के ज़िला पटना का बड़ा नगर गंगा जी के दक्षिणी किनारे पर बसा हुआ है और ईस्ट इण्डियन रेलवे का स्टेशन कलकत्ते से ३३२ मील है ॥

पटना बड़ा पुराना नगर है और पालिपुत्र या पालिबोत्रा के साथ पहिचाना गया है। पालिबोत्रा का ज़िकर यूनानी इतिहासी मेगास्थनज़ ने जो सेलियूकस निकटर की तरफ़ से अङ्गरेज़ी सम्बत्

से ३०० बरस पहिले चन्द्रगुप्त राजा के पास राज्य दूत होकर आया था किया. वायु पुराण में लिखा है कि पाटलि पुत्र या कुसुमा- पुर नगर राजा अजाता शत्रू के पौत्र उदायास्वा ने बसाया था मेगस्थनज लिखता है कि उस ज़माने में पाटलिपुत्र की लम्बाई ८० स्टेडिया और चौड़ई १५ स्टेडिया थी और इसहिसाब से उसका गिर्दा १६० स्टेडिया या २४ मील हुआ, नगर के गिरद ३० हाथ गहरा खाई बनी हुई थी और दिवारों में ६४ बड़े दर्वाजे और ५७० बुर्ज थे पटने का जिकर चीनी यात्री ने भी किया है, मुसलमानों के ज़माने में औरंगजेब के पौत्र अजीम के नामपर पटने का नाम अजीम- आबाद होगया था ॥

पटने में शाह अर्ज़ानी की दर्गाह बड़ी मशहूर है हिन्दू और मुसलमान दोनों इस दर्गाह पर बहुत आते हैं, इस दर्गाह पर जिकाद के महीने में हर साल तीन दिन तक मेला होता है जिस में ५००० लोग आते हैं, दर्गाह के पास ही कर्बला है वहां मुहर्रम के दिनों में लाख के करीब लोग इकट्ठे होते हैं, पास एक तालाब है जो इस महात्मा ने अपने हाथों से खोदा था इस पर भी साल में एक दफा बहुत लोग इकट्ठे होते हैं। शेरशाह की मसजिद जो पटने में सब से पुरानी है और सैफ़खां का मदरसा जो सब से खूबसूरत है देखने के लायक़ हैं ॥

सिक्खों के लिये भी पटना पवित्र जगह है यहां उनका हरि मन्दिर है और गुरुगोबिन्दसिंह ने इसी जगह जन्म लिया था ॥

पटने से कपड़ा तेल के बीज नमक, सज्जी, खाण्ड अनाज चावल. धान बाहर से आते हैं और तमाकू, नारियल, रुई, गर्म मसाला बाहर जाते हैं ॥

पटना में २ धर्मशाला हैं एक स्टेशन के पास लाला गुर

सुख राय सरावगी की बनाई हुई दूसरी स्टेशन से आधा मील मंगल ताल के पास स्वर्गवासी लाला अनन्तलाल अगरवाले की बनाई हुई और तालरी चौक में स्टेशन से डेढ़ मील मारवाड़ियों की बनाई हुई है ॥

पटना कलकत्ते से ३३२ मील है और तीसरे दरजे का किराया ३॥=)। लगता है ॥

पटास ।

जी० आई० पी० रेलवे की पूना रायचूर शाख का स्टेशन है स्टेशन पर वेटिंगरूम और गांव में देशी मुसाफ़िरों के लिये धर्मशाला है, यहां नागेश्वर नाम हिन्दुओं का मन्दिर और एक मुसलमानों की मसजिद भी है, गाड़ियां सवारी के लिये मिल सकती हैं ॥

पटास बम्बई से १५६ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में २॥) और सवारी गाड़ी में १॥=) लगता है ॥

पश्चिमवाहिनी ।

अर्थात् पश्चिम को बहने वाला दरया, इसी सबब से बहुत पवित्र माना जाता है । यह नदी काबेरी दरया की शाख है और इस पर राजाओं के स्नान के घाट बने हैं ॥

यहां से पश्चिम की तरफ़ सड़क पलहल्ली से होती हुई कुर्ग को जाती है पलहल्ली में पहले एक बड़ा कारख़ाना था जिस में चीनी बनती थी यलवल में रैज़ीडेंट साहिब के लिये सुन्दर बंगला है और हनसूर में काफ़ी बनाने के कारख़ाने के सिवाय अमृत महल नामी पशुओं का स्थान है जहां पशु फ़ौज के लिये पाले जाते हैं ॥

पश्चिमवाहिनी सदर्न मरहट्टा रेलवे का स्टेशन है जो पूना से ७०३ मील है । तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ८॥=) और सवारी गाड़ी में ६॥)॥ लगता है ॥

स्टेशन से एक फ़र्लांग पर ६ धोलशियां हैं और कभी कभी बैल गाडियां सवारी के लिये मिल जाती हैं ॥

चांद ग्रहण के मौक़े पर पश्चिमबाहिनी में स्नान मेला होता है

पतूर ।

बरार, ज़िला अकोला के बालापुर तालुक़ में एक नगर है जो अकोला से १८ मील दक्खिन की तरफ़ वाक़े है। नगर के पूर्व की तरफ़ पहाड़ी की ढाल पर बुद्ध लोगों की चट्टान काट कर बनाई हुई अस्थल है। एक और मठ और एक किसी मुसलमान महात्मा का मज़ार है। हर साल हिन्दुओं का मेला जनवरी फ़रवरी में होता है जो एक महीने से भी ज़िआदा रहता है और मुसलमानों का मेला शेख बब्बू के मज़ार पर होता है यह तीन दिन रहता है ॥

अकोला जी० आई० पी० रेलवे पर बम्बई से ३६३ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में ५॥≈) और सवारी गाड़ी में ३॥-) लगता है

पत्तुकोट्टई ।

अहाता मदरास के ज़िला तंजोर में तालुक और नगर हैं। नगर, स्टेशन से आधे मील के फ़ासले पर है और उसमें कई हिन्दुओं के मन्दिर और सरकारी दफ़तर हैं। यहां एक बंगला और २५ चतरम हैं ॥

पगूनी के तेहवार में जो मार्च के महीने में होता है बहुत लोग आते हैं। हर सोमवार को एक मेला भी होता है ॥

पत्तुकोट्टई साऊथ इण्डियन रेलवे की तंजोर डिस्टरिक्ट बोर्ड बरांच पर स्टेशन है इस का फ़ासला मदरास बीच जंकशन से २४८ मील है तीसरे दरजे का किराया २॥) है ॥

परयार ।

अवध के जिला और तहसील उनाओ में नगर है और परयार परगने का सद्र मुक़ाम है । यह नगर उनाओ से १२ मील पश्चिम की तरफ़ वाक़े है और हिन्दू इस को रामायन के वक्त की वारदातों के सबब बहुत पवित्र मानते हैं कार्तिक की पूर्णमासी के मौक़े पर यहां बड़ाभारी मेला होता है जिस में एक लाख के करीब यात्री आते हैं ॥

उनाओ अवध रुहेलखण्ड रेलवे की लखनऊ कानपुर शाख पर लखनऊ से ३४ मील है तीसरे दरजे का किराया ।‌=) लगता है ॥

परकाशा ।

अहाता बम्बई के खानदेश जिले में एक नगर है और शाहादा से जो टापटी दरया के और दो दरयाओं के संघम पर वाक़े है ७ मील है । नगर के पूर्व की तरफ गन्तामेश्वर महादेव का पुराना मन्दिर है जिसका मेला बारहवें साल होता है जब गुरु सिंह की राशि में जाता है। इस नगर के इर्द गिर्द और भी कई मन्दिर देखने के लायक़ हैं ॥

टाप्टीवेली रेलवे के स्टेशन रनाना और दोंदैचे इस नगर के पास हैं । इन दोनों स्टेशनों का सूरत से फासला ११४ और १२२ मील है तीसरे दरजे का किराया १॥) और १॥=) लगता है ॥

पन्तभवा ।

यह नगर जी० आई० पी० रेलवे का स्टेशन है और पवित्र दरया गोदावरी के किनारे पर बसा हुआ है और बड़ा पुराना नगर है, बहुत यात्री इस जगह दरिया में स्नान और उन सुन्दर मन्दिरों

में जो दरया क किनारे हैं पूजा पाठ करने आते हैं। पहले इस नगर में बड़ी रौनक थी॥

स्टेशन के पास अंग्रेजों आर देशियों के लिये धर्मशाला है। दरिया पर रेल का बड़ा सुन्दर पुल बनाहुआ है॥

पन्ताज्वा मनमाद जंकशन के रस्ते बम्बई से २०३ मील है तीसरे दरजे का किराया २) लगता है॥

पंढरपुर।

बारसी छोटी लैन का स्टेशन और बम्बई के दक्षिण पूर्व की ओर जिला शोलापुर में एक नगर है, जो बिथोवा के मन्दिर के सबब बहुत मशहूर है कहते हैं कि एक यति सती ब्राह्मण के एक कपूत पुत्र था जिस का नाम पंडालिक था वह अपनी माता और पिता को बहुत दुख देता था पर होते होते सुधर गया और बड़ा भक्त बनगया एक दिन कृष्ण जी अपनी स्त्री रुकमणी को ढूंढते वहां गये और पंडालिक का अपने माता पिता से मोह का हाल सुनकर उसे देखने गए और उसे अपने पिता के पैर धोते पाया देवता को देख कर उस ने कहा कि आप ठहरें और अपना काम करता रहा परन्तु जब उसने कृष्णजी को पहचाना तो जिस ईंट से अपने पिता के पांव धो रहा था उनके बेठने के वास्ते देदी उसी ईंट पर बैठी हुई कृष्णजी की मूर्ति आजतक मौजूद है। मूर्ति में कृष्णजी के हाथ कूल्हों पर हैं। जैसे कि वह रुकमिनीको ढूंढ़त २ थक कर, पंडालिक के सामने आये थे।

मन्दिर ३५० फीट लम्बा और १७० फीट चौड़ा है और नगर उसके हिस्से में है जो बहुत पवित्र माना जाता है और पंढारी क्षेत्र कहलाता है बिथोबा को पंढारी नाथ भी कहते हैं॥

पंढरपुर बम्बई से बारसो रोड जंकशन के रस्ते २६४ मील है तीसरे दरजे का किराया २॥।⁄)॥ लगता है॥

पांडिचरी।

फ्रांसीसियों को सब से बड़ी बस्ती का रूमंडल के किनारे पर बसी हुई है। इस जगह अंग्रेज़ों और फ्रांसीसियों में बहुत लड़ाइयां हुई थीं इस सबब से बहुत मशहूर है। इस का पूरा पूरा हाल इस किताब में नहीं आ सक्का। यहां गवर्नमैन्ट हाऊस, ईसाइयों के गिरजे, दो पगोडे, डूपले का बुत, लाइट हाऊस, बाग़, टाऊनहाल, कारख़ाने देखने के लायक़ हैं। पांडिचरी में अंग्रेज़ों के लिये दो होटल हैं॥

यह स्टेशन साऊथ इण्डियन रेलवे के बेल्लूपुरम पांडिचरी जंकशन पर मदरास बीच से १२५ मील है तीसरे दरजे का किराया १।⁄)लगता है॥

पार्श्वनाथ पर्ब्बत।

यह पर्ब्बत बङ्गाल में कलकत्ते से २०० मील उत्तर पश्चिम को है। चोटी को जैन लोग सम्मेद शिखर कहते हैं उस पर इनके २० मन्दिर हैं जिनके इधर उधर २० और छोटे २ मन्दिर हैं॥

जैन लोग कहते हैं कि उनके २४ तीर्थकरों में से २० ने इस पवित्र पर्ब्बत पर निर्वाण पाया और पार्श्वनाथ तेईसवें तीर्थकर के नाम पर इस पर्ब्बत का नाम पार्श्वनाथ है। कहते हैं कि २० तीर्थकर इस पर्ब्बत पर से मोक्ष गये हैं, कई मन्दिर बड़े सुन्दर हैं और एक छोटा सा संगमरमर का मठ जिस पर एक लाख २० हज़ार रुपया लगा था बहुत अच्छा है। हर साल १० हज़ार यात्री इस पर्ब्बत पर आते हैं॥

पार्श्वनाथ पब्बत पर पहले अंग्रेजी फौजों की हवा पानी बदलने की जगह थी। इस जगह एक डाक बंगला भी है॥

पार्श्वनाथ पब्बत से ईस्ट इंडियन रेलवे का गिरधो स्टेशन पास है वहां पुशपुश रथ और बैल गाड़ियां सवारी के लिये मिल जाती है इन का किराया १) और १) से ६) रुपये तक होता है। पहाड़ी के नीचे ३ धर्मशालायें हैं पर मन्दिर के पास कोई नहीं॥

गिरधो कलकत्ते से २०६ मील है तीसरे दरजे का किराया २।=)॥ है॥

पाचोरा

जी० आई० पी० रेलवे का स्टेशन है। स्टेशन पर वेटिंगरूम (मुसाफ़रखाना) बना हुआ है और पास एक डाक बंगला और देशी लोगों के लिये सराय है। शेदोरनी में जो पाचोरे से १८ मील है एक मेला होता है जो १५ दिन रहता है। शेदोरनी बाजीराओ पेशवा के गुरू के वंश के के० जे० डिकिशत के पास जागीर है। पाचोरा में मामलतदार (तहसीलदार) की कचहरी और रुई की कलें हैं। सवारी के लिये बैल गाड़ियां और तांगे स्टेशन पर मिलते हैं॥

पाचोरा बम्बई से २३२ मील है तीसरे दरजे का किराया डाकगाड़ी में ३॥=) और सवारी गाड़ी में २।=) लगता है॥

पालीताना

काठियावार के पूर्ब की तरफ़ पालीताना रियासत का बड़ा भारी नगर है और शत्रुंजय पर्वत की जड़ में पूर्ब की ओर बसा हुआ है। पर्वत की सारी चोटी पर मन्दिर बने हुए हैं जिन में से आदिनाथ कुमार पाल बिमलासाह, सम्पतिराजा और चत्रमुख

बहुत नामी हैं। चतुर्मुख का मन्दिर २५ मील से साफ़ दिखाई देता है। किनलाच फ़ोरबस साहिब रासमाला में लिखते हैं कि यह पर्वत सब तीर्थों से पवित्र है और जो यहां आते हैं उनको सदा के लिये सुख मिलता है। जहां से चढ़ाई शुरू होती है वहां बहुत कोठरियां बनी हुई हैं और उन में पत्थर की सिलों पर चरणों के निशान बने हैं। जो जैनी हनुमान का मन्दिर नहीं बना सके वह यह कोठरियां बना देते हैं। यात्रियों को पूजा करने के बाद लौट आना चाहिये। पवित्र पहाड़ों पर सोना और रसोई करना मना है॥

पालीताना बी० बी० एण्ड सी० आई० और भावनगर गोंडाल जूनागढ़ पोर बंदर रेलवे में अहमदाबाद, वीरमगाम और वधवान जंकशनों के रस्ते बम्बई से ४८८ मील है। बम्बई से सोनगढ़ तक ४७६ मील रेल में और वहां से १२ मील गाड़ी में आते हैं। बम्बई से सोनगढ़ तक तीसरे दरजे का किराया ५।~)॥। लगता है॥

पिंडोरी।

नार्थ वेस्टर्न रेलवे के गुरदासपुर स्टेशन के पास एक गांव है इस जगह अप्रैल में बैसाखी का बड़ा भारी मेला तीन दिन तक होता है जिस में ८ हज़ार के करीब लोग आते हैं। गुरुदासपुर में यक्के सवारी के लिये मिलते हैं॥

गुरदासपुर अमृतसर से ४५ मील है। तीसरे दरजे का किराया ॥)॥ लगता है॥

पुदो।

मदरास रेलवे की नार्थवेस्टरन लाइन का स्टेशन है। वहां देवी आलामल्लामल का मन्दिर है जिस के दर्शन को बहुत यात्री आते हैं

पुदी मदरास से ७८ मील है तीसरे दरजे का किराया डाक गाड़ी में १) और सवारी गाडी में ॥।=) लगता है ॥

पुरी ।

लोग इस को जगन्नाथ कहते हैं। बंगाल नागपुर रेलवे का स्टेशन और हिन्दुओं का सब से बड़ा और नामी तीर्थ है। साल में यहां ३ लाख के करीब यात्री आते हैं और रथ यात्रा के मौके पर जो जूलाई में होती हैं एक लाख यात्री होते हैं। पवित्र घेरा चौकोना है और ६५२ फ़ीट लम्बा और ६३० फ़ीट चौड़ा है और उस के गिर्द २० फ़ीट ऊंची पत्थर की दीवार बनी हुई है। इस घेरे के अन्दर कई देवताओं के सौ से भी जियादा मन्दिर हैं पर सब से बड़ा जगन्नाथ का मन्दिर है जिसपर बाहर की ओर देवियों और देवताओं की मूर्ति बनी हैं कहते हैं इस मन्दिर को राजा अनग भीम देव ने सन् ११७४ ई० से २८ वर्ष में साढे सात लाख रुपया खर्च करके बनाया। मूर्ति मन्दिर से भी पहले की है। मन्दिर से इन्द्र दमना तक डेढ़ मील लम्बी अच्छी और चौड़ी सड़क जाती है। इन्द्र दमना में देवता रथयात्रा के दिनों में ८ दिन तक रहता है। जगन्नाथ का मन्दिर जिस को श्री मन्दिर भी कहते हैं बहुत बड़ा है और उसका बड़ा दर्वाज़ा सिंह दर्वाज़ा कहलाता है। मन्दिर के आंगण में यात्री रात दिन के ठहराए हुए वक्तों पर जगन्नाथ उस के भाई बलभद्र और उस की बहिन सुभद्रा की मूर्तियों के दर्शन को इकट्ठे होते हैं। यह मूर्तियां रतना बेदी पर रक्खी हैं। जगन्नाथ और बलभद्र की मूर्तियों के हाथ छोटे छोटे हैं और सुभद्रा के हाथ नहीं हैं। इसका यह सबब बताते हैं कि मन्दिर में जगन्नाथ जी आप बुढे खाती का भेष करके काम कर रहे थे पर काम हो चुकने

से अठवारा पहिले रानी के कहने से मन्दिर का दवार्ज़ा खोल दिया गया था। मूर्तियों को सुन्दर गहने और कपड़े पहनाते हैं और एक बड़ा हीरा जगन्नाथ जी के माथे पर चमकता है। कपड़े दिन और रात में कई बार बदले जाते हैं और भोग या प्रसाद भी कई बार चढ़ाया जाता है। इस प्रसाद में से कुछ यात्रियों को दिया जाता है जो उस के दाम देते हैं और जो बचता है उस को अनन्द बाज़ार में जो हाते में है बेचने के लिये भेज देते हैं इस भोग को एक लाख लोग खाते हैं और इस के बनाने के लिये २८० रसोईए रखे हुए हैं यह बहुत पवित्र माना जाता है और इस को ब्राह्मण और शूद्र एक ही थाली में खा सक्ते हैं॥

रथयात्रा से १५ दिन पहिले स्नानयात्रा होती है देवता स्नान करता है और उस के पीछे १५ दिन तक बीमार रहता है इन दिनों में मन्दिर के दर्वाजे बन्द रहते हैं और किसी को अन्दर जाना नहीं मिलता। उसका रथ जिस के १६ पहिये हैं और उस के भाई और बहिन के रथ तैयार किये जाते हैं १५ दिन के बाद मूर्त्तियां रथ में बिठाई जाती हैं और बाजे बजाते और हज़ारों लोग रथों के रस्सों को खींचते जनकपुर लेजाते हैं जहां देवता १०दिन रहता है॥

पुरी में अंग्रेज़ लोगों के घर बड़े सुन्दर हैं समुद्र के किनारे बने हुये हैं वहां की आब हवा अच्छी है गठिये के रोगियों को बहुत फायदा करती है॥

पुरी कलकत्ते से ३११ मील है तीसरे दरजे का किराया संवारी गाडी में ४८) और मदरास मेल में ४॥।८) लगता है॥

पुरी में लोग अकसर पांडे या प्रोहतों के घरों में और बाजे मंदिर में ठहरते हैं यहां धर्मशाला भी हैं॥

पुन्नूर ।

मद्रास रेलवे की नार्थ ईस्ट लाइन का स्टेशन और डिप्टी तहसीलदार, सब मजिस्टरेट, सब रजिस्टरार अफ़सर माल का हैड कुआरटर (सदरमुकाम) है यहां थाना और डाकखाना भी है यह नगर गंटूर से १८ मील दक्षिण पूर्व की ओर है और बीच में सड़क बनी हुई है। यह स्थान श्री बाबा नारायण स्वामी के मन्दिर के सबब बहुत मशहूर है जहां मई के महीने के करीब एक बड़ा भारा जलसा होता है ॥

पुन्नूर का फासला रायापुरम मद्रास से २३५ मील है तीसरे दरजे का किराया ३-) लगता है ॥

पुष्कर ।

राजपूताना के ज़िला अजमेर से ७ मील के करीब दक्षिण पश्चिमी कोने में एक नगर है झील और तीर्थ की जगह है सारे हिन्दुस्तान देश में यहही नगर है जिस में ब्रह्मा का मन्दिर है कहते हैं यहां ब्रह्मा ने यजन किया था और इसी सबब से झील ऐसी पवित्र मानी जाती है कि पापी से पापी को इस में स्नान करने से स्वर्गलाभ होजाता है इस नगर में पांच बड़े २ मन्दिर ब्रह्मा, सावित्री, बद्रीनारायण वराह और शिव आत्मेश्वर के हैं ॥

ताल के किनारों पर स्नान करने के लिये घाट बने हुए हैं और पास पास राजपूताना के राजों के घर हैं। इस नगर की हद में जीवहत्या करनी मना है। अक्तूबर और नवम्बर में यहां बड़ाभारी मेला होता है जिस में लाख के करीब यात्री ताल में स्नान करने के लिये आते हैं इस मौक़े पर घोड़े और टट्टुओं का बड़ा व्योपार होता है। यहां जियादा ब्राह्मणों की आबादी है ॥

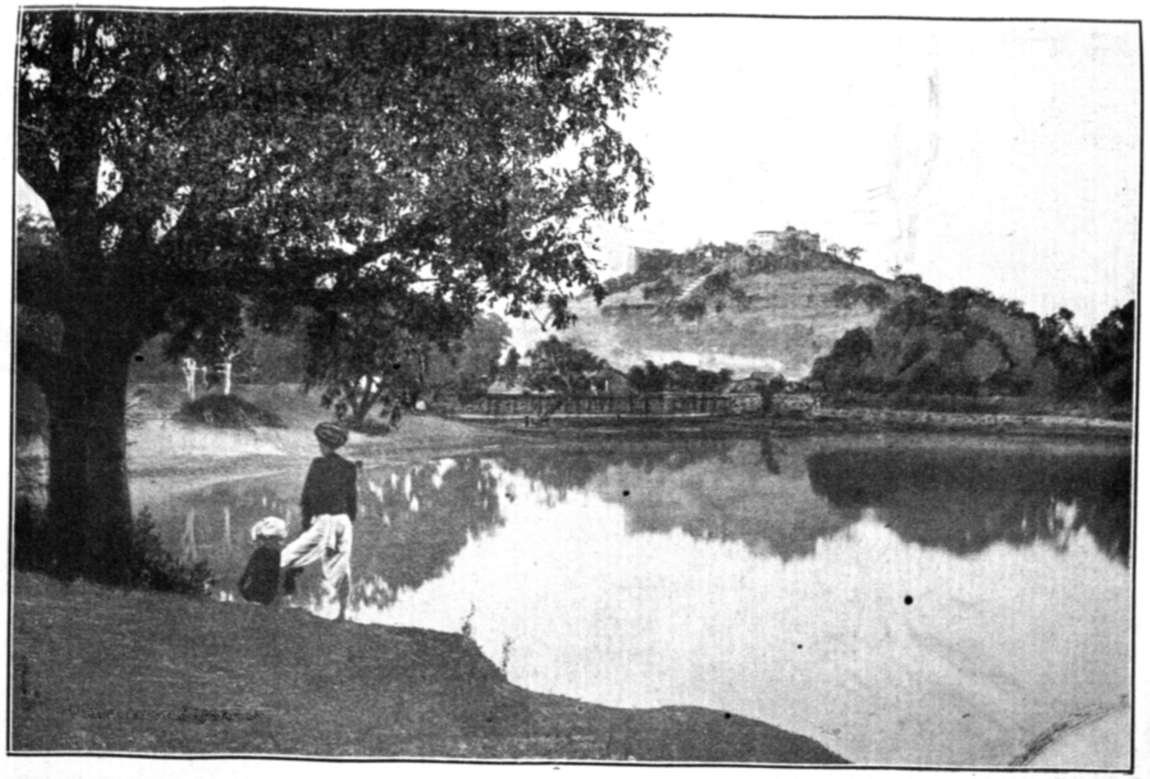


Photo. by Bourne and Shepherd, Calcutta.

पारवती का मन्दिर और तालाब पूना।

अजमेर बी० बी० ऐन्ड सी० आई० याने बम्बई की छोटी लाईन में बम्बई से ६१५ मील है और दिल्ली से २३५ मील है तीसरे दरजे का किराया ६।) और २।=) लगता है ॥

पूना ।

सदन मर्हट्टा रेलवे का स्टेशन है । जी० आई० पी० रेलवे भी यहां मिलती है पूना दक्षिण में बड़ा शहर है और यहां की आबहवा जून से सितम्बर तक बड़ी मन भाओनी होती है, वर्षा की साल भर की औसत २६ इंच है बम्बई के लाटसाहब वर्षा के दिनों में पूना में रहते हैं और यह नगर बम्बई अहाते की फौजों का सदर मुकाम है । यह नगर पेशवाओं की राजधानी था । और आज कल बड़े ब्योपार की जगह है, मिट्टी की मूर्त्तें धातु की चीज़ें और किमखाब यहां बहुत बनती हैं पूना मूला दरया पर मूला और मूथा दरियाओं के संगम से थोड़ी दूर पर बाके है, पारबती का नामी मन्दिर उसी नाम की पहाड़ी पर नगर के दक्षिण पश्चिम की तरफ है, और देखने के लायक है पहाड़ी के नीचे पेशवाओं का हीराबाग है अब उस में टाऊनहाल है, पूना में इसाइयों के कई गिर्जे और काऊंसिलहाल, दक्खिन कालज, इंजनियरों का कालिज और जेल, फईनन्स बिलडिंग, सेसून हस्पताल डाकखाना, गवर्नमेण्ट हाऊस, बनस्पति का बाग़ स्टेशन से ४ मील गनेश किंड में सरकारी मकान है ॥

किरकी छावनी जो बम्बई अहाते के तोपखाने का सदर मुक़ाम है स्टेशन से ४ मील है, बम्बई अहाते के गोला बारूद का कारख़ाना स्टेशन से ४॥ मील है, मूला और मूथा दरियाओं का बन्ध, पानी की चादर, सुन्दर पुल और सुहावने बाग़ देखने लायक़ हैं, बर्कसाला